

नवम्बर 2014

दादावाणी

किंमत ₹ 10



दादा की कृपा ही है मोक्ष का प्रकट द्वार,
किसी भी काल में नहीं है 'ज्ञानी' बिना पूर्णोद्धार।

संपादक : डिम्पल महेता

वर्ष : १० अंक : १

अखंड क्रमांक : १०९

नवम्बर २०१४

संपर्क सूत्र :

त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-382421.

फोन : (079) 39830100

email: dadavani@dadabhagwan.org

www.dadabhagwan.org

दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation

5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Owned by

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printed at

Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at

Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

१५ साल

भारत : ७५० रुपये

यू.एस.ए. : १५० डॉलर

यू.के. : १०० पाउन्ड

वार्षिक

भारत : १०० रुपये

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

भारत में D.D./M.O.

‘महाविदेह फाउन्डेशन’ के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

मैत्रीपूर्ण संबंध, विवाहित जीवन में

संपादकीय

आदर्श संसार के निर्माण में जहाँ स्त्री-पुरुष विवाह के बंधन में बंधकर अपना जीवन परस्पर एक-दूसरे के सुख-दुःख के साथी बनकर, खुद के द्वारा रचे गए संसार की ज़िम्मेदारियों को समझदारी से अदा करते हुए, जीवन में धर्म और अध्यात्म के मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। लेकिन सामान्य रूप से देखा जाए तो विवाहित जीवन में दोनों व्यक्ति क्या इसे वास्तव में पूर्ण कर पाते हैं? यदि हाँ, तो फिर जीवन के मूल्य अधिक से अधिक ध्यान में रखे और प्रबल बना सकें ऐसे प्रयत्न होने चाहिए। और अगर नहीं, तो फिर इस बारे में जाग्रत रहकर, जीवन को सार्थक बनाने के पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए।

पति-पत्नी चाहे कितनी भी छान-बीन करने के बाद शादी करें, लेकिन फिर भी एक बात को तो स्वीकारनी ही पड़ेगी कि दोनों संयुक्त रूप से जीवन गुज़ारने के बावजूद भी दोनों की विचार श्रेणी और कर्मों के उदय में वैविध्य रहेगा ही। ऐसे संयोगों में समतापूर्वक धीरज रखकर, एक-दूसरे के कर्मों के उदय के समय, समझदारी से, चर्चा कर, सुलझाकर आदर्श जीवन जीने के प्रयत्न करने चाहिए। ताकि खुद तो दुःखी न हो बल्कि दूसरों के दुःख में सहभागी बनकर घर को स्वर्ग जैसा बनाने का खुद का ही स्वप्न पूर्ण हो।

परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) खुद गृहस्थ ही थे। और उन्होंने गृहस्थ जीवन का निचोड़ के रूप में जो अनुभवगम्य ज्ञान प्रस्तुत किया है, वास्तव में वह बेजोड़ है। उनके द्वारा दी गई समझ द्वारा आदर्श जीवन व्यवहार करते-करते भी अध्यात्म के उच्चतम शिखरों तक पहुँचा जा सकता है। पूज्य दादाजी का कहना है कि ‘संसार या संसार के सगे-संबंधी अड़चन रूप नहीं हैं, लेकिन खुद की नासमझी, अज्ञानता और दूसरों को नहीं समझ पाना, यही खुद के लिए बाधक है।’ मनुष्य यही नहीं समझ पाता कि खुद की भूलें, खुद की दोष दृष्टि, खुद की स्वार्थ वृत्ति, प्रेम और लगाव के अभाव में खुद, अपने ही जीवन को बरबाद कर रहा है, नीरस बना रहा है।

दादाश्री कहते हैं कि यदि आपको अपने जीवन को आदर्श बनाना हो, घर स्वर्ग समान बनाना हो और विवाहित जीवन में से विसंवादिता दूर करनी हो तो, इस ज्ञान को समझकर जागृतिपूर्वक पुरुषार्थ शुरू करो। आप ही अनुभव करोगे कि समझदारीपूर्वक का जीवन जीने से संसार तो सुंदर बनता ही जाता है, साथ ही साथ ज्ञान की भी उच्च श्रेणियों तक पहुँचा जा सकता है।

तब फिर उपरोक्त परिणामों को प्राप्त करने के लिए क्या करना होगा? तब कहते हैं, अपेक्षा, आग्रह और अभिप्राय छोड़ते जाओ। पति-पत्नी के संबंधों में बराबरी का मौका दो और इससे भी सरल उपाय तो पति या पत्नीपना छोड़कर एक दूसरे के मित्र बन जाओ। मित्रतापूर्ण व्यवहार तो विवाहित जीवन में से विसंवादिता दूर करने की ‘मास्टर की’ (चाबी) है। इस चाबी से चाहे जैसी गंभीर समस्याओं का निपटारा आसानी से लाया जा सकता है।

प्रस्तुत संकलन में गृहस्थ जीवन में पति-पत्नी एक-दूसरे के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करके, जीवन को किस प्रकार आदर्श प्रेममय बनाया जा सके, उसकी अद्भुत समझ प्राप्त होती है। उसी समझ के सम्यक् आराधना से सभी विवाहित महात्माओं के जीवन में मित्रतापूर्ण प्रेम के पुष्प खिल सकें और जीवन मंगलमय बने, साथ ही फाइलों का समभाव से निकाल करके, मोक्ष मार्ग में प्रगति के नये सोपान पार कर सकें यही अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश हैं। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नजर आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

मैत्रीपूर्ण संबंध, विवाहित जीवन में

विवेकपूर्ण व्यवहार, घर में भी जरूरी

दादाश्री : क्या घर में झगड़े होते हैं ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : ‘माइल्ड’ (हल्का) होते हैं या सच में होते हैं ?

प्रश्नकर्ता : सच में भी होते हैं, लेकिन दूसरे दिन उन्हें भूल जाते हैं।

दादाश्री : भूलेंगे नहीं तो और क्या करोगे ? सब भुला देगा, तभी तो फिर से झगड़ा कर पाएगा न ? यदि एक झगड़ा नहीं भूले हों तो दोबारा कौन करेगा ?

प्रश्नकर्ता : ऐसा कहा जाता है न कि जीवन एक जैसा गुजरे, तो वह जीवन नहीं कहलाता।

दादाश्री : तो क्या मरा हुआ कहलाएगा ?

प्रश्नकर्ता : मज़ा नहीं आएगा।

दादाश्री : शास्त्रकारों ने कहा है कि ‘जो बक-बक करे, वह इंसान कैसे कहलाएगा ? जानवर ही कहलाएगा न!’ बाहर लोगों के साथ जैसा विवेक रखते हो न, वैसा ही विवेक घर में रखना चाहिए। बाहर जैसे ‘प्लीज़, प्लीज़’ करते रहते हो। वैसे ही घर में भी ‘प्लीज़-प्लीज़’ करना चाहिए। बहन, जीवन तो अच्छा होना चाहिए न! कैसे चलेगा ऐसा जीवन ?

प्रश्नकर्ता : झगड़ा करने में आनंद आता है ?

दादाश्री : यह दुष्काल है, इसलिए शांति नहीं रहती। खुद जला हुआ, जब दूसरों को जला देता है तब उसे शांति होती है। कोई आनंद में रहे, वह उसे अच्छा नहीं लगता, इसलिए जब आग लगा जाता है, तब उसे शांति होती है। ऐसा है जगत् का स्वभाव। बाकी, जानवर भी विवेकवाले होते हैं, वे झगड़ा नहीं करते। कुत्ते भी अपनी गलीवालों के साथ, अंदर ही अंदर झगड़ा नहीं करते। जब दूसरी गली के कुत्ते आएँ तब सब साथ में मिलकर लड़ाई करते हैं। ये लोग विवेकशून्य हो गए हैं।

संसार - झगड़ों का संग्रहस्थान

आपका महिने में कितनी बार झगड़ा होता है ?

प्रश्नकर्ता : वह तो चलते-फिरते (बार-बार) होता ही रहता है। स्वभाव ही गरम है तो कोई क्या कर सकता है ?

दादाश्री : क्या ऐसे झगड़ा करने से एकदम ठंडा हो जाता है ?

प्रश्नकर्ता : वे बोलते रहते हैं और हम सुनते रहते हैं।

दादाश्री : सुनने में हर्ज नहीं है, लेकिन आप सामने कुछ बोलते तो नहीं हो न ?

प्रश्नकर्ता : नहीं, बल्कि अपने बोलने से तो बढ़ जाएगा न!

दादावाणी

दादाश्री : किसी एक से झगड़ा हो ही नहीं सकता। एक पार्टी झगड़ा कर ही नहीं सकती कभी भी। जब दोनों पार्टियाँ शुरू हो जाएँ तभी झगड़ा होता है। आपके पक्षवाली पार्टी कुछ तो करती होगी न! ताने मारती होगी! कुछ न कुछ तो करती होगी न?

प्रश्नकर्ता : मुँह फूल जाता है। ऐसा कुछ तो होता है।

दादाश्री : हाँ! एक पार्टी का कभी भी झगड़ा नहीं होता। यदि वन पार्टी हो जाए न, यदि हम कुछ भी नहीं बोलें और मन में कुछ न रखें तो कुछ नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : मुँह फूल जाता है। तब हम वहाँ से हट जाते हैं। चेहरे पर असर हो जाता है लेकिन अन्य कामों में लग जाते हैं।

दादाश्री : मारे बिना चेहरे पर असर कैसे हो सकता है? मारने से असर हो सकता है, लेकिन न मारा हो उसे क्या? यदि धर्म भी रहा होता न, तो घर में झगड़ा नहीं होता। अगर होता भी तो वह महीने में एकाध बार ही होता। अमावस्या महीने में एक बार ही आती है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यहाँ तो तीसों दिन अमावस्या ही रहती है! झगड़ों से क्या मिलता होगा?

प्रश्नकर्ता : नुकसान ही होता है।

दादाश्री : घाटे का व्यापार तो कोई करता ही नहीं न? कोई कहता नहीं है कि घाटे का व्यापार करो! कुछ नफा तो कमाता होगा न? संसार झगड़ों का संग्रह स्थान है। कहीं दो आनी तो कहीं पर चार आनी और कहीं पर सवा रुपये तक पहुँच जाता है। बड़े-बड़े बंगले हैं। उनमें सिर्फ पाँच लोग

ही रहते हों, फिर भी झगड़ते रहते हैं। कुदरत खाने-पीने के लिए देती है, फिर भी लोग झगड़ते हैं। ये लोग क्लेश-कलह और झगड़ा करने में ही शूरवीर हैं।

क्लेश रहित जीवन ही धर्म है

पहले के लोग तो अगर खाने-पीने का नहीं होता था, कपड़ें वगैरह नहीं होते थे फिर भी चला लेते थे जबकि अभी, किसी भी चीज़ की कमी नहीं है, फिर भी इतनी कलह-कलह और कलह ही! पति को 'इन्कमटैक्स'-'सेल्सटैक्स' की आफतें होती हैं, इसलिए वहाँ के साहब से वह घबराता रहता है और यदि घर में बाईसाहब से पूछा जाए कि 'आप क्यों घबरा उठी हो?' तब वह कहती है कि 'मेरा पति तेज़ मिजाज़ है,' ऐसे संसार में, क्या यह सब अच्छा लगता है आपको?

प्रश्नकर्ता : अभी तो यह संसार अच्छा लगता है।

दादाश्री : कड़वा नहीं लगता?

प्रश्नकर्ता : गहराई में जाएँ तो कड़वा लगता है।

दादाश्री : इतनी कड़वाहट लगती है, फिर भी कैसा है इस जीव का स्वभाव! वह वापस आम काटकर, खाकर सो जाता है! अरे, अभी तो बीवी के साथ झगड़ा किया था न! तो फिर क्या देखकर आम खा रहा है? जिससे झगड़ा हो, वह बीवी यदि आम काटकर दे तो वह किस काम की? लेकिन आप चला लेते हो या नहीं चला लेते? फिर जब आप झगड़ा करो तो वह चला लेती है। वह करे भी क्या? दोनों ही 'मेजिस्ट्रेट'!

इसलिए (हम क्या कहते हैं कि) 'घर में क्लेश नहीं होना चाहिए। कुछ भी हो जाए, उल्टा-सीधा हो जाए फिर भी क्लेश नहीं होना चाहिए। घर

में झगड़े नहीं होने चाहिए, वही धर्म रहना चाहिए बस।'

पति-पत्नी के संबंध मित्र समान होने चाहिए

प्रश्नकर्ता : लेकिन पति-पत्नी के बीच थोड़ा गुस्सा तो करना ही चाहिए न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कोई कानून नहीं है। पति-पत्नी के बीच बहुत शांति रहनी चाहिए। जहाँ दुःख हो, वे पति-पत्नी हैं ही नहीं। सच्ची फ्रेंडशिप में ऐसा नहीं होता। फिर यह तो सब से बड़ी फ्रेंडशिप (मित्रता) है। यहाँ नहीं होना चाहिए। यह तो लोगों ने घुसा दिया है। खुद से ऐसा होता है इसलिए घुसा दिया है कि नियम ऐसा ही है। पति-पत्नी के बीच तो बिल्कुल नहीं होना चाहिए, बाकी सब जगह भले ही हो।

स्त्री-पुरुष यानी दोनों मित्र ही हैं। मित्रता सहित ही घर चलाना है। इसके बजाय ऐसी दशा कर दी।

विवाह करने का कारण क्या है?

यह शादी किसलिए है? आप बाहर से कमाकर लाओ और वह घर का काम करे और आपका संसार चले और धर्म भी चले, इसलिए शादी करनी है। और अगर बीवी कहे कि एक-दो बच्चे चाहिए, तो उसका भी निबेड़ा ला दो। फिर राम तेरी माया! लेकिन ये तो स्वामी बनने जाते हैं। अरे, स्वामी बनने क्यों चला है? तुझ में बरकत तो है नहीं और स्वामी बनने चला है! 'मैं तो स्वामी हूँ' कहता है। बड़ा आया स्वामी! मुँह तो देखो इनके। पतियों के! लेकिन लोग तो पतिपना करते हैं न?

गाय-भैंसों का स्वामी बन बैठता है, लेकिन वे गायें भी स्वीकार नहीं करती हैं तुम्हें स्वामी के रूप में। वह तो आप मन में मानते हो कि 'यह मेरी गाय है।' तुम तो कपास को भी मेरा कहते हो, 'यह

मेरा कपास है।' कपास को तो मालूम भी नहीं बेचारे को। तुम्हारे होते तो तुम्हें देखते ही बढ़ते और तुम्हारे घर चले जाने पर नहीं बढ़ते। लेकिन यह कपास तो रात को भी बढ़ता है। कपास रात को बढ़ता है या नहीं बढ़ता?

प्रश्नकर्ता : बढ़ता है, बढ़ता है।

दादाश्री : उसे कहीं तुम्हारी जरूरत नहीं है, उसे तो बरसात की जरूरत है। जब बरसात न हो, तो सूख जाता है बेचारा।

विवाहित जीवन यानी पार्टनरशिप

प्रश्नकर्ता : लेकिन क्या उसे (बीवी को) हमारा पूरा ध्यान क्यों नहीं रखना चाहिए?

दादाश्री : ओहोहो! बीवी ध्यान रखने के लिए लाए होंगे क्या?

प्रश्नकर्ता : इसीलिए तो बीवी को घर लाए हैं न!

दादाश्री : ऐसा है न, शास्त्रकारों ने कहा है कि पतिपना मत जताना। वास्तव में तुम पति नहीं हो। यह पार्टनरशिप (भागीदारी) है। ऐसा तो यहाँ व्यवहार में कहा जाता है कि पति और पत्नी। लेकिन वास्तव में पार्टनरशिप है। स्वामी हो, इसलिए तुम्हारा हक़ या दावा नहीं है। आप दावा नहीं कर सकते। समझा-समझाकर सारा काम करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : (उसके कुटुंब ने) कन्यादान किया, दान में कन्या दी, तो फिर हम उसके स्वामी ही हो गए न?

दादाश्री : यह सधरे हुए समाज का काम नहीं है, यह वाइल्ड (जंगली) समाज का काम है। हमें सुधरे हुए समाज को यह देखना चाहिए कि पत्नी को ज़रा भी तकलीफ़ न हो। वर्ना आप सुखी नहीं रहोगे। पत्नी को दुःख देकर कोई भी सुखी

नहीं हुआ है और जिस स्त्री ने पति को कुछ भी दुःख पहुँचाया होगा, वे स्त्रियाँ भी कभी सुखी नहीं हुईं!

ये देखो, पति बन बैठे थे! ओहोहो! बहुत बड़े पति! जैसे फिर कभी पति बनने को नहीं मिलेगा। कई बार पति बन चुका है, फिर भी पति बन बैठता है। यह तो निकाल करने की चीज़ है। इस सत्ता उपयोग नहीं करना है, इस सत्ता को भोगना है। सत्ता उपयोग करने के लिए नहीं है। इस सत्ता को जानकर इसे भोगने के लिए है। लोग सत्ता का उपयोग करते हैं, है न? 'तू नहीं समझेगी, बेअक़ल है। तू तेरे घर चली जा', कहते हैं। यह अक़ल का बोरा! पति बनने में हर्ज नहीं है। लेकिन पतिपना करने में हर्ज है।

सीखो जीवन जीने की कला

प्रश्नकर्ता : पति-पत्नियों में जो झगड़े होते हैं, उनका क्या कारण है?

दादाश्री : जहाँ झगड़े हैं वहाँ 'अंडर डेवेलप' (अविकसित) प्रजा है। लेखा-जोखा करना नहीं आता है। इसलिए झगड़े होते हैं। जब दोनों झगड़ा करें तो पड़ोसी देखने के लिए आएँगे या नहीं? फिर तमाशा होगा या नहीं? और यदि फिर से साथ नहीं रहना हो तो लड़ो, खूब लड़ो। अरे अलग कर डालो! तब कहेंगे, 'नहीं, कहाँ जाएँगे?' यदि वापस इकट्ठे ही रहना हो तो फिर क्यों झगड़ते हो? क्या हमें सावधान नहीं हो जाना चाहिए? बीवी के साथ तो अच्छी तरह रहो! दिन-रात जिसके साथ रहना हो उनके साथ लड़ना शोभा देता है क्या? हमें, किसी एक को समाधान कर लेना चाहिए कि भाई मेरा, तुझ से और तेरा, मुझ से (झगड़ा)! ऐसा सब क्यों होना चाहिए? चाहे दुनिया कहे कि ये पति-पत्नी हैं, लेकिन हम तो फ्रेन्ड हैं। फिर है कोई परेशानी?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : आप फ्रेन्डशिप करोगे या नहीं? एक तो डाँटते हो और ऊपर से रौब जमाते हो? घर पर बीवी को डाँटते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : कहना पड़ता है न।

दादाश्री : हाँ, कहना पड़ता है और आपको कोई कहनेवाला नहीं है। भगवान बन बैठे हो! मर्यादापूर्वक जीओ। जीवन जीने की कला सीखो। वही सिखा रहा हूँ न! अमरीका में सब को वही सिखाता हूँ और इन्डिया में भी सिखाता हूँ। और क्या करूँ? फिर पछतावा नहीं करना पड़े, कुछ ऐसा जीवन जीओ! कहना पड़ेगा! ये बड़े आए कहनेवाले और ऑफिस में यदि बॉस डाँटे न तो कहता है, 'नहीं साहब यू आर राइट, यू आर राइट, यू आर राइट!' वैसा ही यहाँ पर भी कहना है कि 'यू आर राइट।' यदि कढ़ी खारी बन गई तो कहना नहीं है, चुप रहना है। क्या कभी गलती नहीं हो सकती? क्या कोई जान-बूझकर भूल करता है? यह तो मौके की तलाश में ही रहता है कि कब कुछ हो। अरे, किस तरह का है? खुद को एक रूम में सोना है और वहीं पर झगड़ा? बाहर से झगड़ा करके आओ और घर पर दोनों चाय पीकर रौब दिखाओ! बीवी-बच्चे तो हमारे आश्रय में आए हुए हैं। जो हमारे आश्रय में हो उसे दुःख कैसे दे सकते हैं? यदि सामनेवाले का दोष हो, तब भी हमें आश्रित को दुःख नहीं देना चाहिए।

आश्रितों का करो रक्षण

प्रश्नकर्ता : मेरी पत्नी के साथ मेरी बिल्कुल नहीं बनती। चाहे जितनी निर्दोष बात करूँ, मेरा सच हो फिर भी वह उल्टा समझती है। बाहर का जीवनसंघर्ष चलता है, लेकिन यह व्यक्तिसंघर्ष क्या होगा?

दादावाणी

दादाश्री : ऐसा है, मनुष्य खुद के हाथ के नीचेवाले मनुष्यों को इतना अधिक कुचलता है, इतना अधिक कुचलता है कि कुछ बाकी ही नहीं रखता। खुद के हाथ के नीचे कोई मनुष्य आया हो, फिर वह स्त्री के रूप में हो या पुरुष के रूप में हो, खुद की सत्ता में आया उसे कुचलने में कुछ बाकी ही नहीं रखते।

घर के लोगों के साथ कलह कभी भी नहीं करनी चाहिए। जब उसी कमरे में पड़े रहना है वहाँ कलह किस काम की? किसी को परेशान करके खुद सुखी हो जाएँ, ऐसा कभी भी नहीं होता, और हमें तो सुख देकर सुख लेना है। हम घर में सुख दें तो ही सुख मिलेगा और चाय-पानी भी ठीक से बनाकर देंगे, नहीं तो चाय-पानी भी बिगाड़कर देंगे। 'कमजोर पति पत्नी पर सूर।' जो अपने संरक्षण में हों, उनका भक्षण किस तरह किया जाए? जो खुद के हाथ के नीचे आया हो उसका रक्षण करना, वही सब से बड़ा ध्येय होना चाहिए। उससे गुनाह हुआ हो तो भी उसका रक्षण करना चाहिए। ये सब दूसरे देश के सैनिक अभी यहाँ कैदी हैं, फिर भी उन्हें कैसा रक्षण देते हैं! तब ये तो घर के ही हैं न! ये तो बाहरवालों के सामने म्याऊँ हो जाते हैं, वहाँ झगड़ा नहीं करते और घर पर ही सब करते हैं। जो खुद की सत्ता के नीचे हो, उसे कुचलते रहते हैं और ऊपरी (बॉस) को 'साहब-साहब' करते हैं। अभी यह पुलिसवाला डाँट तो साहब-साहब कहेगा और घर पर वाइफ सच्ची बात कहती हो, तब उसे सहन नहीं होता और उसे डाँटता है। 'मेरे चाय के कप में चींटी कहाँ से आई?' ऐसा करके घरवालों को डराता है। उसके बदले तो शांति से चींटी निकाल ले न! घरवालों को डराता है और पुलिसवाले के सामने काँपता है! अब यह घोर अन्याय कहलाता है। हमें यह शोभा नहीं देता। स्त्री तो खुद की साझेदार कहलाती है। साझेदार के साथ क्लेश? यह तो क्लेश

होता हो वहाँ कोई रास्ता निकालना पड़ता है, समझाना पड़ता है। घर में रहना है तो क्लेश किसलिए?

भूल निकालने से कोई फायदा नहीं

दादाश्री : वह कभी तेरी गलतियाँ निकालती है या नहीं निकालती?

प्रश्नकर्ता : निकालती है।

दादाश्री : उस समय तू उनकी गलतियाँ निकालता है या नहीं निकालता?

प्रश्नकर्ता : अवश्य।

दादाश्री : हाँ, मैं वही कह रहा हूँ कि फैमिली में गलतियाँ नहीं निकालनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : ऐसा कुछ समझाइए न, कि गलतियाँ क्यों नहीं निकालनी चाहिए?

दादाश्री : लेकिन क्या गलतियाँ निकालनी चाहिए? गलतियाँ निकालने से क्या फायदा? इमोशनल (भावुक) इंसान ही गलतियाँ निकालता है। किसी को भी गलतियाँ निकालने का अधिकार नहीं है। कितने समय से यह गलतियाँ निकालना चल रहा है? 'यह बिगड़ (खराब हो) गया है,' ऐसा कहता है कभी?

प्रश्नकर्ता : थोड़ा-थोड़ा चलता रहता है। छोटी-छोटी गलतियाँ निकालता हूँ।

दादाश्री : उसकी गलती कभी-कभी निकालते हो या हर रोज़?

प्रश्नकर्ता : हर रोज़।

दादाश्री : नहीं, गलती नहीं निकालनी चाहिए। गलती क्यों निकालेंगे? किसी मित्र की गलती निकालेंगे तो मित्रता टूट जाएगी।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : यह मित्र नहीं है न, यह तो पत्नी है।

दादाश्री : तभी यह खूँटे से बाँधी है, इसलिए और वह खूँटे से नहीं बंधा है।

प्रश्नकर्ता : एक बार गलती करे तो माफ कर देता हूँ। लेकिन जब वही गलती दोबारा करती है तब नहीं चलाता हूँ। तब गुस्सा आ जाता है मुझे।

दादाश्री : आप गुस्सा करते हो न?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : लेकिन गलती वह करती है तो आप क्यों कमजोर पड़ जाते हो?

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन उसकी गलती की वजह से हम सभी को सहन करना पड़ता है।

दादाश्री : नहीं, लेकिन कमजोर क्यों पड़ जाते हो आप? आपको गुस्सा नहीं करना है, सिर्फ देखते रहना है। इसलिए उसके मन में भय रहे कि देखो न, ये तो कुछ बोलते ही नहीं हैं! कितने अच्छे इंसान है! ऐसा पति दोबारा नहीं मिलेगा। 'हे भगवान! ऐसा पति सात जन्मों तक देना।' कहेगी।

प्रश्नकर्ता : लेकिन गलती निकलने पर उसे क्यों दुःख होना चाहिए?

दादाश्री : लेकिन ऐसा कहने की ज़रूरत ही क्या थी? ऐसा है न, लोगों ने पूरा घर बिगाड़ दिया है, ऐसे झगड़े करके।

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेकिन ऐसा दुःख घर में तो नहीं होना चाहिए। किसी रास्ते चलते इंसान से कहे तो उसे दुःख हो जाएगा, लेकिन घरवालों को ऐसा दुःख नहीं होना चाहिए। उसकी गलती निकालने में 'देयर इज़ नथिंग रॉंग इन देट (उसमें कुछ गलत नहीं है)!'।

दादाश्री : नहीं, गलतियाँ निकालनी ही नहीं चाहिए। दुःख तो हमेशा होगा ही। गलती निकालने से दुःख तो होता ही है। अतः गलती निकालो ही मत। उसका अपमान करने के बराबर है वह तो। ये तो आपको उस पर बैर है एक तरह का या फिर पतिपना जताते हो कि 'मैं हूँ!' बड़े आए पति!

पहचानो जीवनसाथी को, मित्र समान

प्रश्नकर्ता : मेरी शादी होने के बाद हम दोनों लोग एक-दूसरे को पहचानते हैं और लगता है कि पसंद करने में गलती हो गई, किसी का स्वभाव किसी से नहीं मिलता, तो दोनों में क्यों और किस प्रकार से मेल बैठायें ताकि सुखी हो सकें?

दादाश्री : यह आप जो कह रहे हो न, इनमें से एक भी वाक्य सही नहीं है। पहला वाक्य कि शादी के बाद दोनों व्यक्ति ने एक-दूसरे को पहचानते हैं। लेकिन (वास्तव में) नाममात्र को भी नहीं पहचाना है। अगर पहचान लिया होता तो यह झंझट ही नहीं रहती। ज़रा भी नहीं पहचाना है। पहचान जाते तो यह परेशानी ही नहीं रहती।

मित्र को अच्छी तरह से पहचानते हैं। वह भी पूरी तरह नहीं, लेकिन मित्र को पहचानने का प्रयत्न क्यों करते हैं क्योंकि 'हमें बंधन नहीं है लेकिन वहाँ बंधन बाँधना है।' रियली स्पीकिंग बंधन नहीं है, लेकिन प्रेम से बाँधना है न! इसलिए उसे बारीकी से समझ, समझ, समझ करते हैं। जबकि वाइफ को तो 'मार उल्टा और कर सीधा,' समझने तक का भी प्रयत्न नहीं। आपकी समझ में आया या नहीं?

रखो मित्र समान प्रेम

आज यदि कोई पत्नी अपने पति को दुःख दे रही हो तो इसका मतलब पूर्वजन्म का कोई बैर बंधा हो तो उसका बदला ले रही है। यह सब बैर से बंधा हुआ है, प्रेम से नहीं। प्रेम तो मतभेद ही पड़ने न दे।

उसी को लाइफ कहते हैं। अतः उसे प्रेम दिखाओ। उल्टी-सीधी हो, फिर भी तू प्रेम दिखा। तो यह ऐसी चीज़ है कि एक दिन उस प्रेम के वश हो जाएगी। स्त्री जाति प्रेम के वश हो जाए, ऐसी है। वर्ना किसी अन्य तरह से वश होनेवाली नहीं है। उस बेचारी को कुछ भी नहीं चाहिए, सिर्फ प्रेम माँगती है। क्या वह नहीं माँगेगी प्रेम? माँ-बाप छोड़कर यहाँ (ससुराल) आती है तो क्या प्रेम नहीं माँगेगी? अतः उसके साथ फ्रेंड की तरह रहना चाहिए। जैसे फ्रेंड होता है न, उस तरह से जीवन जीना चाहिए, प्रेम से! मालिक तो नहीं बन जाना चाहिए न?

‘एक मिनट’ के लिए भी झंझट नहीं हो, वह पति कहलाता है। जैसे मित्र के साथ नहीं बिगड़ने देते, वैसे ही संभालना। मित्र के साथ यदि संभालकर नहीं चलते तो मित्रता टूट जाती है। मित्रता यानी मित्रता। उन्हें शर्त बता देना कि ‘तू मित्रता में यदि आउट ऑफ मित्रता में जाएगी तो गुनाह लगेगा। इसलिए मिल जुलकर मित्राचारी रख।’

शादी की तो वह समाज के डर के कारण या इसलिए कि हमें डर रहे कि भाग नहीं जाए अब। आज लड़ाई हो और वह चली जाए तो लोग क्या कहेंगे? इसलिए शादी करनी है। फिर मित्रता रखनी चाहिए। मित्रता में कितना अच्छा संबंध रखता है? फ्रेंड के प्रति सिन्सियर रहता है। फ्रेंड दूर रहकर भी कहता है कि ‘मेरा फ्रेंड ऐसा है। मेरे बारे में बुरा सोच ही नहीं सकता।’ उसी प्रकार पत्नी के लिए बुरा नहीं सोचना चाहिए। वह क्या फ्रेंड से बढ़कर नहीं है?

प्रश्नकर्ता : है, सही बात है।

दादाश्री : आपको तो अब ‘समभाव से निकाल’ करना है। घर में ‘वाइफ’ के साथ ‘फ्रेंड’ की तरह रहना है। वह, आपकी ‘फ्रेंड’ और आप, उनके ‘फ्रेंड’! दो मित्र अगर संभाल, संभाल कर रहते हैं तो फिर यह तो मित्रों से भी बढ़कर है।

सोचो तो सही, मनमानी किसकी होती है

प्रश्नकर्ता : घर में या बाहर फ्रेंड्स में, सब जगह हर एक के मत अलग-अलग होते हैं। और वहाँ हमारी इच्छा अनुसार नहीं हो तो फिर हमें गुस्सा क्यों आ जाता है? तब क्या करें?

दादाश्री : यदि सभी लोग अपनी मनमानी करने जाएँ, तो क्या होगा? ऐसा विचार आ ही कैसे सकता है? तुरंत ही ऐसा विचार आना चाहिए कि यदि सभी लोग अपनी मनमानी करने जाएँ तो यहाँ पर आमने-सामने बर्तन तोड़ देंगे और खाने को भी नहीं बचेंगे। इसलिए कभी भी मनमानी मत करना। इच्छा ही मत रखना ताकि उससे उल्टा हो ही नहीं। जिसे गरज होगी, वह इच्छा करेगा। ऐसा रखो।

प्रश्नकर्ता : हम कितने भी शांत रहे, लेकिन पुरुष गुस्सा हो जाते हैं, तब क्या करें?

दादाश्री : वह गुस्सा हो जाए और झगड़ा बढ़ाना हो तो आप भी गुस्सा करो नहीं तो बंद कर दो। फिल्म बंद करनी हो तो हमें शांत हो जाना चाहिए और फिल्म बंद नहीं करनी हो तो पूरी रात चलने देना। कौन मना करता है? क्या फिल्म अच्छी लगती है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, फिल्म अच्छी नहीं लगती।

दादाश्री : गुस्सा करके क्या करना है? इंसान खुद गुस्सा नहीं होता, यह तो मिकेनिकल एडजस्टमेन्ट (कर्म के उदय से) गुस्सा करता है। खुद को फिर मन में पछतावा होता है कि गुस्सा नहीं किया होता तो अच्छा होता।

हल लाओ समझदारी से

प्रश्नकर्ता : उसे ठंडा करने का उपाय क्या है?

दादाश्री : अगर मशीन गरम हो गई हो तो

दादावाणी

उसे ठंडा करने के लिए तो, मशीन को पड़ा रहने दे तो अपने आप ही थोड़ी देर में ठंडी हो जाती है और हाथ लगाए और उसे हिलाए तो हम जल जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : मेरे और मेरे हज़बेन्ड के बीच गुस्सा और बहस हो जाती है। कहा-सुनी वगैरह ऐसा सब हो जाता है, तो मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : तो गुस्सा तुम करती हो या वे? गुस्सा कौन करता है?

प्रश्नकर्ता : वह तो फिर मुझ से भी हो जाता है।

दादाश्री : तो खुद ही अपने आप को अंदर डाँटना चाहिए, 'क्यों तू ऐसा कर रही है?' जो किया है उसे भुगतना तो पड़ेगा ही न! लेकिन ये प्रतिक्रमण (पछतावा) करे तो सभी दोष खत्म हो जाते हैं। नहीं तो अपनी ही दी हुई परेशानी हमें वापस भुगतनी पड़ती है। लेकिन प्रतिक्रमण करने से ज़रा ठंडा पड़ जाता है।

वहाँ काम लो कला से

प्रश्नकर्ता : पति को किस प्रकार प्रेम से वश में किया जा सकता है?

दादाश्री : पति घर में आए तो अगर हमें लगे कि आज कुछ परेशान लग रहे हैं। उन्हें उनके साहब ने ज़रा डाँटा है, तो उसे मन में ऐसा हो रहा हो कि ये साहब, नालायक कहाँ से मिला ऐसा वगैरह, इन साहब को मेरे प्रति बैर ही है। अरे! हमेशा के लिए नहीं है उसका बैर। अरे! साहब का क्या दोष है? साहब को उसकी पत्नी ने डाँटा होगा। कहाँ का धक्का है, यह तो देख! ये धक्का जो लगा, वह आया कहाँ से इसका तो पता लगा! लेकिन ऐसा इस तरह जाँच नहीं करते, इसलिए फिर मुँह फुलाकर घर आता है। यह तो फिर घर आने पर हाँकती है। यह तो परेशान हो उसे और

अधिक परेशान करती है। उसे किसी का धक्का लगा हो तभी वह किसी और को धक्का लगाएगा न, ऐसा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : उसी की वजह से झगड़े हैं। हमें समझ जाना चाहिए कि यह धक्का कहाँ से आया!

प्रश्नकर्ता : साहब अपने घर का धक्का हमें लगाए तो उसके लिए क्या उपाय है?

दादाश्री : और क्या उपाय करना है? खीर बनानी हो तो उसमें नीचे लकड़ियाँ जलानी पड़ती है या नहीं जलानी पड़ती? तब फिर खीर चिढ़ जाती है वह उफन जाती है तब लकड़ियाँ निकाल लेनी पड़ती हैं, यही रास्ता है इसका। खीर चिढ़ती नहीं है, हैं न? वर्ना फिर वह उफन जाएगी वापस। यह तो आते ही कहती है, 'आप का मुँह फूला हुआ है।' तो ऐसा नहीं बोलना चाहिए। पति अगर अच्छे मूड़ में न हो, तो उस समय बोलना नहीं चाहिए। क्योंकि कईबार इंसान का मूड़ बदल जाता है। अतः इसलिए पति के घर में आते ही आपको समझ जाना है कि आज ये मूड़ में नहीं दिख रहे हैं। जैसे गाड़ी गरम हो जाती है, वैसे ये हो गया है। उनका मूड़ देखकर काम नहीं लेना चाहिए? इंसान का मूड़ तो बदल सकता है न, अज्ञानी का मूड़ बदलते कितनी देर लगती है? मूड़ को पहचानते हो या नहीं पहचानते? सभी स्त्रियाँ पति के मूड़ को पहचानती हैं कि 'आज इनका ठिकाना नहीं है।' तब अगर हमें पता है कि इन्हें फर्स्ट क्लास चाय की आदत है, तो घर में जो मँहगी चाय रखी हो, जो कोई बड़े लोग आए उनके लिए हो तो वह चाय बनाकर देनी चाहिए। कुछ बोलना-करना नहीं है। चाय-नाश्ता, उनकी मनचाही मिठाई या जो ठीक लगे वह देना चाहिए, तो वह शांत हो जाएगा न, तो प्रेम बढ़ेगा। तुम्हें कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : हाँ में हाँ मिलाने से नहीं चलेगा कोई। ऐसे उपाय करने पड़ेंगे।

सीखो जीवन में एडजस्ट होना

प्रश्नकर्ता : अब तो जीवन में शांति का सरल मार्ग चाहते हैं।

दादाश्री : एक ही शब्द जीवन में उतारोगे, ठीक से, एक्जेक्ट?

प्रश्नकर्ता : एक्जेक्ट, हाँ।

दादाश्री : 'एडजस्ट एवरीव्हेर' इतना ही शब्द यदि आप जीवन में उतार लोगे तो बहुत हो गया। आपको शांति अपने आप प्राप्त होगी। शुरूआत में छः महीनों तक अड़चनें आएँगी, बाद में अपने आप ही शांति हो जाएगी। पहले छः महीनों तक पिछले रिएक्शन (प्रतिक्रिया) आएँगे, देर से शुरूआत करने की वजह से। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! इस कलियुग के ऐसे भयंकर काल में यदि एडजस्ट नहीं हुए न, तो खत्म हो जाओगे।

संसार में और कुछ नहीं आए तो हर्ज नहीं, लेकिन एडजस्ट होना तो आना ही चाहिए। सामनेवाला 'डिसएडजस्ट' होता रहे, लेकिन आप 'एडजस्ट' होते रहोगे, तो संसार-सागर तैरकर पार उतर जाओगे। जिसे दूसरों को अनुकूल होना आया, उसे कोई दुःख ही नहीं रहता। 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! प्रत्येक के साथ 'एडजस्टमेन्ट' हो जाए, यही सब से बड़ा धर्म है। इस काल में तो भिन्न-भिन्न प्रकृतियाँ, इसलिए 'एडजस्ट' हुए बिना कैसे चलेगा?

एडजस्टमेन्ट से सुधरेगा संसार

प्रश्नकर्ता : मेरे जीवन का सब से बड़ा प्रश्न यह है कि अभी तक ऐसा हुआ है कि मैं एडजस्टमेन्ट नहीं ले सका हूँ। और ऐसे छोटे-छोटे

कारणों की वजह से मैंने बहुत गलतियाँ की हैं। अपनी वाइफ को भी मैंने बहुत दुःख दिया है, इतना ही नहीं लेकिन वे परेशान हो गई हैं मुझ से। और वह मुझे अब रियलाइज़ हुआ है कि यह सब मेरी वजह से हुआ है। मुझे इसमें से निकलना है, तो इसका उपाय बताइए।

दादाश्री : क्या आप आपनी वाइफ से परेशान नहीं हो गए हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, यों तो उन्हें मेरे प्रति बहुत ही लगाव है। ऐसा नहीं है कि मुझे लगाव नहीं है। मुझे भी है।

दादाश्री : लगाव है तभी ऐसा कह रहे हो न! क्या कुछ सर्विस वगैरह करते हो?

प्रश्नकर्ता : बिज़नेस करता हूँ। खुद का छोटा-मोटा व्यापार करता हूँ।

दादाश्री : किस चीज़ का?

प्रश्नकर्ता : मटीरियल्स सप्लाई करने का।

दादाश्री : वहाँ उन लोगों के साथ एडजस्ट हो पाते हो?

प्रश्नकर्ता : उन लोगों के साथ एडजस्ट हो पाता हूँ। उन लोगों के साथ पहले नहीं हो पाता था, लेकिन अब उन लोगों के साथ एडजस्टमेन्ट लेना सीख गया हूँ।

दादाश्री : इसमें भी सीखने की ज़रूरत है। इसमें और कुछ नहीं है। यह भी सीख जाओगे न! तो सब आ जाएगा।

प्रश्नकर्ता : अब मुझे क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अगर आपको प्रेम है तो एडजस्टमेन्ट रहेगा ही। इसलिए आपको ऐसा रखना चाहिए कि उनके साथ अच्छी तरह से

समाधानपूर्वक रह सकूँ। फ्रेंडली होना चाहिए, फ्रेंड! समझ में आया न?

संसार में और कुछ न आए तो हर्ज नहीं है। व्यापार में कुछ करना न आए तो हर्ज नहीं है, लेकिन एडजस्ट होना आना चाहिए। अर्थात्, वस्तुस्थिति में एडजस्ट होना सीखना चाहिए। इस काल में एडजस्ट होना नहीं आएगा तो मारा जाएगा। इसलिए 'एडजस्ट एव्रीव्हेर' होकर काम निकाल लेने जैसा है।

हो जाओ झगड़ा पुफ

प्रश्नकर्ता : हमें झगड़ा नहीं करना हो, हम कभी भी झगड़ा नहीं करे, इसके बावजूद घर में सभी सामने से रोज़ झगड़ा करे, तो हमें क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हमें झगड़ा पुफ हो जाना चाहिए। 'झगड़ा पुफ' हो जाएँ तभी इस संसार में रहा जा सकेंगे। अपना ऐसा स्वरूप होना चाहिए कि झगड़ा करनेवाला भी बोर हो जाए। 'वर्ल्ड' में कोई भी हमें 'डिप्रेस' (हताश) नहीं कर सके, ऐसा होना चाहिए। हम अगर 'झगड़ा पुफ' हो गए तो फिर कोई झंझट ही नहीं है न! लोगों को झगड़े करने हों, गालियाँ देनी हों, तो कोई भी हर्ज नहीं है और इसके बावजूद भी ढीठ नहीं कहलाएँगे। बल्कि जागृति खूब बढ़ेगी।

पहले जो झगड़े किए हुए है, उससे बैर बंधे हैं और वे आज झगड़े के रूप में चुकाए जा रहे हैं। झगड़ा होता है उसी समय बैर का बीज पड़ जाता है। वह अगले जन्म में उगेगा।

प्रश्नकर्ता : तो वह बीज किस तरह दूर हो सकता है?

दादाश्री : धीरे-धीरे 'समभाव से निकाल' करते रहो तो दूर हो जाएगा। बहुत बड़ा बीज डल गया हो तो देर लगेगी, शांति रखनी पड़ेगी। उसके खूब प्रतिक्रमण करने पड़ेंगे। कोई अपना कुछ लेता

नहीं है। दो टाइम खाना मिलता है, कपड़े मिलते हैं, तो फिर और क्या चाहिए? कमरे में ताला लगाकर जाए, लेकिन इतना ही देखना है कि दो टाइम खाना मिलता है या नहीं? हमें बंद करके जाएँ, तो भी कोई बात नहीं। हम सो जाएँगे। पूर्वजन्म के बैर ऐसे बंधे हुए होते हैं कि हमें ताले में बंद करके जाते हैं! बैर और फिर वह भी नासमझी से बंधा हुआ! समझदारीवाला होता तो हम समझ जाएँ कि यह समझदारीवाला है, तो भी हल आ जाए। अब नासमझीवाला हो वहाँ किस तरह से हल आए? इसलिए वहाँ पर बात को छोड़ देना चाहिए।

हल लाओ समस्या का ज्ञानपूर्वक

हम तो इतना जानते हैं कि झगड़ा करने के बाद में 'वाइफ' के साथ फिर से कोई व्यवहार शुरू ही नहीं करना हो तो अलग बात है लेकिन फिर से बोलना है तो फिर बीच की सारी भाषा गलत है। हमारे लक्ष्य में यह रहता ही है कि दो घंटे बाद में फिर से बोलना है, इसलिए किच-किच न करें। अगर आपको फिर से अभिप्राय नहीं बदलना हो तो अलग बात है। अपना अभिप्राय नहीं बदले, तो अपना किया हुआ सही है। फिर से अगर 'वाइफ' के साथ बैठनेवाले ही नहीं हो तो झगड़ना ठीक है लेकिन ये तो कल फिर से साथ में बैठकर खाना खाना है, तो फिर कल नाटक किया उसका क्या? इस पर सोचना तो पड़ेगा न? ये लोग तिल सेंक-सेंककर बोते हैं, इसलिए सारी मेहनत बेकार जाती है। झगड़े होते हैं तब लक्ष्य में रहना चाहिए कि कर्म नाच नचा रहे हैं, और फिर उस नाच का ज्ञान सहित हल लाना चाहिए।

फर्ज निभाओ समाधानपूर्वक

हमें अपना फर्ज निभाना है इसलिए पकड़ मत पकड़ो, तुरंत बात को हल कर दो, इसके बावजूद भी अगर सामनेवाला इंसान बहुत झगड़ा करें तो कहना

कि 'मैं तो पहले से ही बेवकूफ हूँ, मुझे तो ऐसा सब आता ही नहीं है' ऐसा कह दिया तो फिर सामनेवाला अपने को छोड़ देगा। किसी भी रास्ते से छूट जाओ और मन में ऐसा मत मान बैठना कि 'सब चढ़ बैठेंगे तो क्या करूँगा?' वे क्या चढ़ बैठेंगे? चढ़ बैठने की शक्ति किसी में है ही नहीं। यह सभी लट्टू कर्म के उदय से नाच रहे हैं। इसलिए, जैसे-तैसे करके आज का शुक्रवार क्लेश रहित बिता दो, कल की बात कल देख लेंगे। दूसरे दिन कोई पटाखा फूटना होगा तो किसी भी तरह से ढंक देना फिर देख लेंगे ऐसे दिन निकालने हैं।

संयमपूर्वक करो व्यवहार

प्रश्नकर्ता : लेकिन वाइफ बॉस बन बैठती है उसके क्या करें?

दादाश्री : उसमें हर्ज नहीं। वाइफ तो जलेबी और पकौड़ियाँ बनाकर देती है। तब आप कहना कि 'ओहोहो! तुमने तो पकौड़ी और जलेबियाँ बनाकर खिलाई हैं न!' ऐसा करने से खुश हो जाएगी और कल वापस टंडी पड़ जाएगी, अपने आप ही। इसके लिए घबराना नहीं है। वे कब चढ़ बैठती है? उसकी यदि मूँछे उग जाएँ तो चढ़ बैठेगी। लेकिन क्या मूँछे उगनेवाली हैं? भले की कितने भी अक्लमंद हो जाएँ फिर भी मूँछे उगेंगी?

प्रश्नकर्ता : नहीं उगेंगी!

दादाश्री : और अगर हम मूँछें मूँड दे तो चली जाएँगी? क्लीन शेव कर लें लेकिन फिर भी चली जाएँगी क्या? नहीं जाएँगी, अतः अगर यह मूँछे आ जाएँ तब तो वह अपने पर चढ़ बैठेगी लेकिन इस बात के लिए आप निश्चिंत रहना, मूँछे नहीं उगेंगी! बराबरी करने जाते हैं, लेकिन बराबरी नहीं की जा सकती, भले ही साम्यवादवाले इसके लिए उछल-कूद करें। ऐसे कहीं एक समान नहीं हुआ जा सकता। आप मूँछे नहीं रखते हो तो उससे क्या स्त्री

मूँछें रख सकती हैं? हमें जैसी मरज़ी हों वैसी रख सकते हैं लेकिन स्त्रियाँ क्या उनकी मरज़ी होने पर मूँछे रख सकती हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं।

दादाश्री : इसलिए स्त्री कभी भी पति नहीं बन सकती। इसलिए आपको पति बन बैठने की ज़रूरत ही नहीं है, पति हो ही, बनने क्यों जाते हो? जो हो वह बनने का रहा ही कहाँ? स्त्रियों में बहुत शक्ति होती है, लेकिन वे पुरुष नहीं बन सकती। यानी कि वह आपकी ऊपरी नहीं बन सकती। आप विवाह करके घर में ले आए तो वह आपकी ऊपरी नहीं बन जाएगी। अतः आपको मन में ऐसा नहीं रखना है कि वह आपकी ऊपरी बन जाएगी, चढ़ बैठेगी। यह तो इसी भय की वजह से बेकार झगड़े होते हैं।

वर्ना एक जन्म में आपका जितना हिसाब है इतना ही पूरा होगा। बाकी, इससे आगे कोई बड़ा हिसाब होगा ही नहीं। एक जन्म का हिसाब तो पक्का ही है, तो फिर हम क्यों शांति से न रहें?

एक भाई कह रहे थे कि मेरे साथ मेरी पत्नी की रोज़ अनबन होती है। अब वाइफ का दोष है या उसका दोष? क्या कहते हो?

प्रश्नकर्ता : दोष तो दोनों का ही रहता है न!

दादाश्री : क्योंकि वाइफ कभी भी यों ही (बिना कारण) पुरुष के साथ झगड़ने आती ही नहीं है। वह तो जब पुरुष में कोई बरकत न देखें तब झगड़ने के लिए तैयार हो जाती है। बरकत देखें या फिर संयमी देखें, तो नहीं बोलेगी, एक अक्षर भी नहीं बोलेगी। वाइफ तो जब कोई बरकत न देखे तो फिर ऐसा ही होगा न! बरकत तो होनी चाहिए न! पर्सनालिटी होनी चाहिए, उसमें संयम होना चाहिए।

दादावाणी

हाँ, फिर अगर खुद में बरकत न हो तब तो सारे ही चढ़ बैठेगा। हर कोई चढ़ बैठेगा। बरकत तो होनी चाहिए न! शादी करने के बाद बरकत नहीं होगी तो किस काम का?

वह चढ़ बैठेगी, एसी सारी शंकाएँ मन में नहीं रखनी चाहिए। इन शंकाओं की वजह से ही टसल में आते रहते हैं न, निरंतर दुःख में ही रहा करते हैं, कोल्ड वॉर में। अब कॉल्ड वॉर (शीत युद्ध) करने की क्या ज़रूरत है आपको?

प्रश्नकर्ता : लेकिन पत्नी पर तो वर्चस्व जमाने जाता ही है न?

दादाश्री : तो वाइफ ने कोई गुनाह किया है? लोगों पर वर्चस्व जमाना। वाइफ से कह देना कि 'तुझे मुझ पर वर्चस्व नहीं जमाना है और मुझे तुझ पर वर्चस्व नहीं जमाना है। हम मित्र हैं, सिन्सियर फ्रेंड।' जबकि लोग मुझसे कहते हैं, 'फिर तो वाइफ चढ़ बैठेगी!' मैंने कहा, 'हं क्या उसे मूँछ आ जाएगी? भले चाहे कितनी भी दवाई लगाएँ फिर भी मूँछ आएँगी क्या?'

समझदारी से टालो मतभेद

प्रश्नकर्ता : कुछ लोगों को जब तक मतभेद नहीं पड़े तो आनंद ही नहीं आता न?

दादाश्री : अरे, कलह से अगर आनंद होता तो उसे कलह कोई कहता ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : मतभेद, कलह नहीं है, मतभेद इसका मतलब तो बस, आनंद आता है उसमें।

दादाश्री : नहीं, बिल्कुल आनंद नहीं आता, (बल्कि) परेशान हो जाते हैं। आनंद तो जब चौपड़ खेलें उस समय आता है। उसके बाद कैसा आनंद?

एक मतभेद नहीं पड़े उसके लिए तो कितना सब सोच लेना पड़ता है क्योंकि कभी (मतभेद)

पड़ा ही नहीं है न! अनचाही सब्जी लाकर भी बनाएँ, तो भी मुझे खा लेना है। यदि छोड़ दूँ तो वह मन में ऐसा कहेगी कि 'यह पसंद नहीं है।' इसलिए पसंद नहीं हो फिर भी मैं खा लेता हूँ। हाँ, इससे उन्हें भी आनंद होता है। उन्हीं को नहीं, सभी जगह। ना पसंद हो तो मैं खा लेता हूँ वह इसलिए कि सामनेवाले व्यक्ति को ऐसा नहीं लगे कि यह नहीं भाया। कढ़ी तो कभी खारी हो सकती है, ऐसा नहीं नहीं है कि नहीं होती।

प्रश्नकर्ता : हो जाती है।

दादाश्री : अपने से गलती नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : होती है, होती है।

दादाश्री : उसी तरह से जब उनकी भूल हो तो हमें मेल-मिलाप कर लेना चाहिए, ज़रा सा कम लेकर भी बात पूरी कर देनी चाहिए।

एडजस्ट होकर करो प्रदर्शित प्रेम

हर एक बात में हम सामनेवाले के साथ 'एडजस्ट' हो जाएँ तो कितना सरल हो जाएगा! अपने साथ क्या ले जाना है? इसलिए आपको उन्हें सीधा नहीं करना है और वह आपको सीधा नहीं करे, जैसा मिला वैसा ही सोने का है। किसी की प्रकृति कभी ढीली नहीं होती। कुत्ते की पूँछ टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है इसलिए हमें सावधान रहकर चलना है। जैसी हो वैसी भले ही हो, लेकिन 'एडजस्ट एवरीव्हेर।'

डाँटने की जगह आप वाइफ को नहीं डाँटें तो उससे वह और ज़्यादा सीधी रहती है। जो गुस्सा नहीं करता, उसका ताप बहुत सख्त होता है। हम देखकर भी नहीं डाँटते फिर भी हमारा बहुत ताप लगता है।

हम चालीस साल से किसी के भी साथ ऊँची

आवाज़ में नहीं बोले हैं। किसी के सामने आवाज़ ऊँची नहीं की है, यह तो सभी लोग जानते हैं। कहते भी हैं कि 'वे तो भगवान जैसे हैं।' यानी कि एक आँख में रौब रखना है और एक आँख में फ्रेंडशिप रखनी है।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, जिसकी दोनों ही आँखों में रौब है उसका क्या होता है?

दादाश्री : वह गलत है। एक आँख में रौब और एक आँख में प्रेम। प्रेम की तो ज़रूरत है ही न। प्रेम के बिना तो इंसान जीए किस आधार पर?

खुद सुधरकर निकाल लो काम

प्रश्नकर्ता : 'खुद की भूल है' ऐसा स्वीकार करके पत्नी को नहीं सुधारा सकता?

दादाश्री : सुधारने के लिए खुद को सुधारने की ज़रूरत है। किसी को सुधार ही नहीं सकता। जो सुधारने के प्रयत्नवाले हैं वे सभी अहंकार है। खुद सुधरा तो सामनेवाला सुधर ही जाएगा। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं कि जो बाहर सब को सुधारने निकलते हैं, लेकिन घर में उनकी 'वाइफ' के सामने इज़्जत नहीं होती, मदर के सामने इज़्जत नहीं होती। ये किस तरह के लोग हैं? पहले तू सुधर। 'मैं सुधार लूँ, मैं सुधार लूँ।' ये गलत इगोइज़्म (अहंकार) है, अरे तेरा ही ठिकाना नहीं है, तो तू क्या सुधारेगा? पहले खुद समझदार हो जाने की ज़रूरत है। (भगवान) महावीर, महावीर बनने के ही प्रयत्न करते थे और उनका इतना प्रभाव पड़ा है। पच्चीस सौ साल हो गए लेकिन उनका प्रभाव जाता नहीं है। हम किसी को सुधारते नहीं है। किसी को भी सुधारने का प्रयत्न मत करना, लेकिन खुद ही सुधारने का प्रयत्न करना। किसी को सुधारने का अहंकार तो तीर्थकरों ने भी नहीं किया है। वह तो मोक्ष का दान देने आए थे?

दूसरों की भूल निकालने का हमें क्या अधिकार है?

घर में किसी की भी भूल नहीं निकालनी चाहिए। आपको कैसी लगती है यह बात?

प्रश्नकर्ता : अच्छी।

दादाश्री : सभी लोग यह नहीं जानते हैं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई लोगों को आदत पड़ चुकी होती है तो उसमें क्या कर सकते हैं?

दादाश्री : आदत नहीं, यह तो ऐसा है कि उसे ऊपरीपना चाहिए! उसे जान-बूझकर भूल निकालनी है। अब, यह गलत कहलाता है। इसे फैमिली नहीं कहते। फैमिली अर्थात् प्रेम से रहना चाहिए। दखलंदाजी नहीं होनी चाहिए, स्त्री को ऐसा नहीं होना चाहिए कि यह गलत है। उसे सुधारने में पड़ी रहती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर पति को ऐसा हो तो?

दादाश्री : इस तरह फिर दोनों आमने-सामने लड़ते हैं और इसी में फैमिली लाइफ खराब हो जाती है। शोभा नहीं देता यह हमें। थोड़ा बहुत बदलाव आना चाहिए! हम इन्डियन्स (भारतीय) हैं। सोचने-समझने के बाद भी अगर बदलाव नहीं करे तो हम इन्डियन कैसे? नहीं मझ में आया बहन आपको?

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी।

दादाश्री : अर्थात् आप बहनों को समझना है कि अपनी जिस गलती को पति समझ सकते हों, उनकी वह गलती हमें नहीं निकालनी है। जो गलती बहने समझ सकती है, वह गलती पति को नहीं निकालनी चाहिए।

खुद की गलतियाँ खुद सुधारो

प्रश्नकर्ता : कई लोग खुद की गलती समझते हैं फिर भी अगर नहीं सुधरे तो?

दादावाणी

दादाश्री : वे कहने से नहीं सुधरेंगे। कहने से तो उल्टा चलेगा बल्कि। वह तो कभी अगर इस बात पर सोचे तब हमें कहना चाहिए कि यह गलती कैसे सुधरेगी? इसमें आमने-सामने बातचीत करो फ्रेंडशिप की तरह। वाइफ के साथ फ्रेंडशिप रखनी चाहिए, नहीं रखनी चाहिए? औरों के साथ फ्रेंडशिप रखते हो (वैसे)! फ्रेंड के साथ क्या रोज-रोज इस तरह कलह करते हो? उसकी गलतियाँ दिखाते रहते हो? नहीं! क्योंकि फ्रेंडशिप टिकाये रखनी है। और यह तो शादी करके आई है। कहाँ जाएगी? ऐसा हमें शोभा नहीं देता। जीवन बगीचे जैसा बनाओ। घर में मतभेद नहीं होना चाहिए, कुछ भी नहीं होना चाहिए, ऐसा घर बगीचे जैसा लगता है और हमें घर में ज़रा सी भी दखल नहीं होने देनी चाहिए किसी में भी। छोटा बच्चा भी अगर अपनी गलती समझता हो तो हमें नहीं बतानी चाहिए। नहीं समझता हो तभी गलती बतानी चाहिए। आपको कैसा लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है, सही बात है।

दादाश्री : जान-बूझकर गलतियाँ बतानी चाहिए क्या? जो वह जानता है वे उसे क्यों बताएँ। तुझे बताते हैं, बहुत बताते हैं क्या.....?

ये तो उसे परेशान करते हैं और अपना पतिपना ज़ाहिर करते हैं! पत्नी को संभालना नहीं आया और आए पति बनने! पत्नी को संभाला ऐसा कब कह सकते हैं कि पत्नी के मन में प्रेम बिल्कुल भी कम न हो। ये तो परेशान करता है तो प्रेम टूट जाता है और कहती है 'कभी-कभी अगर मेरी भूल हो जाए तो वह शिकायत करता है।' गलती होती है या नहीं होती इंसान से? लेकिन लोगों को जान-बूझकर पतिपना करने की आदत पड़ गई है! अंदर ही अंदर पति बनने की इच्छा है, और गलती कैसे निकालें? अब आज से आपको समझ में आ गई है यह बात?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यह तो बेकार पागलपन था पतिपना करने का। यानी कि पतिपना नहीं करना चाहिए। पतिपना तो उसे कहते हैं कि जब सामने कोई प्रतिकार न हो। ये तो तुरंत प्रतिकार।

खुद की भूल देखकर लाओ निबेड़ा

प्रश्नकर्ता : दादा, व्यवहार में व्यू पोइन्ट (दृष्टिबिंदु) की टकराव बड़े लोग छोटों की भूलें निकालते हैं और छोटे उनसे छोटे की भूल निकालते हैं, ऐसा क्यों?

दादाश्री : ये तो ऐसा है कि बड़ा छोटे को खा जाता है। बड़ा छोटे की भूल निकाले उसके बजाय हमें कहना चाहिए 'मेरी ही भूल है।' जो भूल अपने सिर ले लेता है उसका निबेड़ा आ जाता है। सामनेवाला अगर सहन न कर सके तो हम अपने सिर ले लेते हैं, दूसरों की भूल नहीं निकालते। क्यों दूसरों पर थोपे? अपने पास तो सागर जैसा पेट है! देखो न, मुंबई के सभी गटर का पानी सागर समा लेता है न? वैसे ही हमें भी पी लेना है। उससे क्या होगा कि इन बच्चों पर, और बाकी सभी पर प्रभाव पड़ेगा। वे भी सीखेंगे, बच्चे भी समझ जाएँगे कि इनका पेट सागर जैसा है! जितना भी आए उसे जमा कर लो। व्यवहार का नियम है कि अपमान करनेवाला खुद की शक्ति देकर जाता है, इसलिए हँसते-हँसते अपमान ले लेना चाहिए! मन बड़ा होना चाहिए। ब्रोड माइन्डेड (विशाल मन के) बनना चाहिए।

मतभेद से नुकसान किसे?

प्रश्नकर्ता : दादा, तो ऐसा एडजस्टमेंट करने में क्या अहंकार आड़े आता है?

दादाश्री : हाँ, वही न! अहंकार का ही सब झंझट है न! मतभेद से कभी भी निबेड़ा नहीं आता।

मतभेद अच्छा नहीं लगता फिर भी मतभेद पड़ जाते हैं न! सामनेवाला ज़्यादा खिंचता रहे तो हमें छेड़ देना चाहिए और फिर ओढकर सो जाना चाहिए। नहीं छोड़ेंगे और दोनों खिंचते रहेंगे तो दोनों को ही नींद नहीं आएगी और पूरी रात बिगड़ेगी। व्यवहार में, व्यापार में भागीदार को कैसा संभाल लेते हैं! तो इस संसार की भागीदारी में हमें नहीं संभाल लेना चाहिए!

यानी कि एडजस्ट होना है इस दुनिया में। क्योंकि हर एक चीज़ का एन्ड (अंत) होता है। और अगर लंबे समय तक चले तब भी (कुछ कहने से) आप उसे हेल्प (मदद) नहीं करते बल्कि नुकसान करते हो। खुद अपने आफ का नुकसान करते हो और सामनेवाले का भी नुकसान होता है। उसे कौन सुधार सकता है? जो सुधरा हुआ हो वही सुधार सकता है। खुद का ही अगर ठिकान न हो, तो सामनेवाले को किस तरह सुधार सकता है।

मनुष्य होकर भी प्राप्त संसार में दखल नहीं करे तो संसार सरल और सीधा चलता रहेगा। लेकिन ये प्राप्त संसार में दखल ही करते रहते हैं। जब से जागे तभी से ही दखल। प्राप्त संयोगों में बिल्कुल भी दखल नहीं हो तो भगवान की सत्ता रहती है।

(इसलिए डोन्ट सी लॉस प्लीज़ सेटल, नीयम मत देखो समाधान करो।) सामनेवाले को सेटलमेन्ट लेने का कहना कि 'आप ऐसा करो, वैसा करो' ऐसा सब कहने का टाइम ही कहाँ है। सामनेवाले की सौ गलतियाँ हों तब भी हमें तो ऐसा कहकर कि खुद की ही गलती है, ऐसा कहकर आगे निकाल जाना है। इस काल में 'लॉ' तो देखा जाता होगा? यह तो अंतिम स्तर आ गया है! जहाँ देखो वहाँ पर भाग-दौड़-भोग-दौड़। लोग उलझ गए हैं! घर जाएँ तो वाइफ चिल्लाती है, बच्चे चिल्लाते हैं, नौकरी पर जाए तो सेट चिल्लाता है, गाड़ी में जाए तो भीड़ में

धक्का खाता है! कहीं भी चेन्ज नहीं है कहीं तो चेन्ज होना चाहिए न? कोई लड़ पड़े तो हमें उस पर दया रखनी चाहिए कि 'ओहोहो इसे कितनी ज़्यादा परेशानी होगी कि यह लड़ पड़ा है?' जो अकुला जाते हैं वे सभी कमज़ोर हैं।

मतभेद का कारण, नासमझी

प्रश्नकर्ता : हमें क्लेश नहीं करना हो लेकिन कोई सामने से झगड़ा करे तो क्या करना चाहिए? उसमें अगर एक जाग्रत हो लेकिन सामनेवाला क्लेश करे तो वहाँ पर तो क्लेश होगा ही न!

दादाश्री : दिवार के साथ लड़े तो कितनी देर तक लड़ सकते हैं? इस दिवार के साथ एक दिन सिर टकराया तो हमें उसके साथ क्या करना चाहिए? सिर टकराया मतलब दिवार के साथ झगड़ा हुआ, तो हमें दिवार को मारना चाहिए? उसी प्रकार जो खूब क्लेश करवाए वे सभी दिवारें हैं! इसमें सामनेवाले का क्या देखना! हमें अपने आप समझ जाना है कि ये दिवार जैसे हैं। ऐसा समझने के बाद कोई मुश्किल नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम मौन रहे तो सामनेवाले पर उल्टा असर होता है कि इनका ही दोष है, और वह ज़्यादा क्लेश करेगा।

दादाश्री : ये तो हमने मान लिया है कि मैं मौन हो गया इसलिए ऐसा हो गया। रात को कोई उठे और अंधेरे में जाते हुए दिवार से टकरा जाए तो वहाँ पर क्या इसलिए टकराए कि हम मौन रहे?

मौन रहो या बोलो वह उसे स्पर्श ही नहीं करता, इसका कोई लेना-देना नहीं है। अपने मौन रहने से सामनेवाले पर असर होता है ऐसा कुछ नहीं है या फिर ऐसा भी कुछ नहीं है कि अपने बोलने से असर होता है। 'ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' है। किसी की इतनी

सत्ता नहीं है। जगत् बिल्कुल सत्ता रहित है। इसमें कोई क्या कर सकता है? दिवार के पास यदि सत्ता होती तो इन लोगों के पास भी होती। इन दिवारों को डाँटने की हमें सत्ता है? वैसा ही सामनेवाले के साथ है। और उसके निमित्त से जो टकराव है वह तो हमें छोड़ेगा नहीं, तो बेकार ही शोर मचाने का क्या मतलब है? जहाँ उसके हाथ में सत्ता ही नहीं है! जब आप दिवार जैसे बन जाओ न, आप अगर पत्नी को डाँटते रहो तो उसके अंदर जो भगवान विराजमान है, वे नोट करते हैं कि 'ये मुझे डाँट रहा है।' और जब वह आपको डाँटे तब आप दिवार जैसे बन जाओ, तब आपके अंदर बैठे हुए भगवान आपकी 'हेल्प' करेंगे।

दिवार के साथ मतभेद डालो तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : सिर फुट जाएगा।

दादाश्री : सिर फुट जाए, तब क्या दिवार को कोई परेशानी है। अतः मतभेद मत करना। दिवार को क्या लेना-देना है? अतः अगर अपनी गलती हो तभी दिवार के साथ टकराते हैं। उसमें दिवार की गलती नहीं है। लोग मुझ से पूछते हैं कि 'क्या ये सभी लोग दिवारें हैं?' तब मैं कहता हूँ कि 'हाँ, लोग भी दिवार ही है, मैं यह देखकर कहता हूँ, यह कोई गप्प नहीं है।'

किसी के भी साथ मतभेद होना और दिवार के साथ टकराना ये दोनों एक जैसी चीजे हैं। इन दोनों में कोई फर्क नहीं है। ये जो दिवार के साथ टकराते हैं, वे नहीं दिखने की वजह से टकराते हैं और जब मतभेद पड़ता है तो वह मतभेद भी नहीं दिखने के कारण पड़ता है। उसे आगे का दिखाई नहीं देता, उसे आगे सोल्यूशन (हल) नहीं मिलता इसलिए मतभेद पड़ता है। ये जो क्रोध होता है वह क्रोध भी नहीं दिखने की वजह से होता है। ये जो क्रोध-मान-माया-लोभ करते हैं, वह नहीं दिखने

की वजह से ही करते हैं। तो अब इस तरह बात को समझ लेना चाहिए न? चोट लगी उसका दोष है, क्या दिवार का कोई दोष है? तो इस दुनिया में ये सभी दिवारें ही है। दिवार टकराए तो हम उसके साथ कौन सही है, कौन गलत है ऐसा करने नहीं जाते न कि 'मेरा सही है' ऐसा लड़ने के लिए झंझट नहीं करते न? वैसे ही ये सारा दिवार की स्थिति में ही है। इनके साथ सही ठहराने की ज़रूरत ही नहीं है।

जो टकराते हैं न, तब हमें समझ लेना है कि ये दिवारें ही हैं। फिर अगर ढूँढे कि दरवाजा कहाँ है, तो अँधेरे में भी दरवाजा मिल जाएगा। ऐसे हाथ हिलाते-हिलाते जाए तो दरवाजा मिलेगा या नहीं मिलेगा? और वहाँ से फिर निकल भागना है। टकराना नहीं है। ऐसे नियम का पालन करना है कि किसी के भी साथ टकराव में नहीं आना है।

पाशवता का परिणाम क्या ?

बाकी इन्हें तो जीना ही नहीं आता। शादी करनी नहीं आई, तो बड़ी मुश्किल से शादी की। बाप बनना नहीं आता, यों ही बाप बन बैठा। बच्चे खुश हो जाए अब ऐसा जीवन जीना चाहिए। सुबह-सुबह उठकर सभी को तय करना चाहिए कि 'आज किसी के सामने टकराव में नहीं आना है, हम सब ऐसा सोच ले।' टकराव से क्या फायदा होता है वह मुझे बताओ।

प्रश्नकर्ता : ना, नहीं होता।

दादाश्री : क्या फायदा होता है?

प्रश्नकर्ता : दुःख होता है।

दादाश्री : नहीं। दुःख होता है सिर्फ इतना ही नहीं है, टकराव से अभी तो दुःख हुआ लेकिन पूरा दिन बिगड़ता है और अगला जन्म, और फिर मनुष्यपना भी चला जाता है। मनुष्यपना तो कब

रहता है कि जब सज्जनता हो तब, लेकिन अगर पाशवता हो और लोगों को परेशान करते रहे, सींग मारते रहे तब फिर वहाँ क्या वापस मनुष्यपना आएगा? गाय-भैंसे सींग मारती है या इंसान मारते हैं?

प्रश्नकर्ता : इंसान ज़्यादा मारते हैं।

दादाश्री : तो जब इंसान मारे तो फिर जानवर में जाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : उसमें तो और भी ज़्यादा मार पड़ेगी।

दादाश्री : हाँ, ज़्यादा मार पड़ेगी। यानी कि वहाँ पर दो पैरों के बदले चार पैर और ऊपर से फिर पूँछ। वहाँ क्या कोई ऐसा-वैसा है। वहाँ पर कोई दुःख नहीं है? बहुत है, ज़रा समझना पड़ेगा। ऐसा कैसे चलेगा फिर?

टकराव का कारण, राग और आसक्ति

प्रश्नकर्ता : एक स्त्री को खुद के पति के प्रति बहुत ही राग रहता है, इसलिए क्या उनमें टकराव होती है?

दादाश्री : हाँ। फिर अगर वह कहीं बाहर गया हो और जल्दी नहीं आया तो चिढ़ती रहती है। वीतरागों को कुछ नहीं होता। रागवालों में झगड़े ही होते रहते हैं। बहुत रागवालों में झगड़े ही होते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : बहुत राग हो तो झगड़े होते हैं, यह बात सही है।

दादाश्री : कम हो तो भी होते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन कई बार हमें द्वेष नहीं करना फिर भी द्वेष हो जाता है, इसका क्या कारण है?

दादाश्री : किसके साथ?

प्रश्नकर्ता : कई बार पति के साथ ऐसा हो तब?

दादाश्री : वह द्वेष नहीं कहलाता। आसक्तिवाला प्रेम जो है, वह हमेशा ही रिप्लेशनरी (प्रत्याघाती) है। अतः जब वे चिढ़ते हैं तब ये फिर उल्टे चलते हैं। उल्टे चले और कुछ समय तक दूर रहे तो वापस प्रेम उमड़ता है। और वापस प्रेम में चोट लगे तो टकराव होता है और तब फिर वापस प्रेम बढ़ता है। जहाँ अत्यधिक प्रेम होता है, वहाँ पर गड़बड़ होती है। जहाँ कहीं पर भी गड़बड़ चलती रहती हो न, वहाँ भीतर में इन लोगों में प्रेम है। प्रेम हो तभी झगड़ा होता है। पूर्वजन्म का प्रेम है इसीलिए दखल रहती है। अत्यधिक प्रेम है, नहीं तो दखलंदाजी ही नहीं होती न! दखलंदाजी का स्वरूप ही यह है।

इसे लोग क्या कहते हैं? 'टकराव से तो हमारा प्रेम बढ़ता है।' तो बात भी सही है। लेकिन यह आसक्ति भी टकराव में से ही खड़ी हुई है। जहाँ पर टकराव कम है वहाँ पर आसक्ति नहीं होती। जिस घर में स्त्री-पुरुष में टकराव कम होता है, वहाँ पर आसक्ति कम है ऐसा मान लेना है। समझ में आए ऐसी बात है?

संसार में फँसाव, आसक्ति से

प्रश्नकर्ता : जब बहुत आसक्ति हो वहाँ पर अनबन भी ज़्यादा होती है न?

दादाश्री : वह तो आमने-सामने आसक्ति से ही सारी झंझट खड़ी हो जाती है। जिस घर में दोनों लोग आमने-सामने बहुत लड़ते हो न तो हमें समझ लेना चाहिए कि यहाँ पर आसक्ति ज़्यादा है। इतना समझ लेना है। इसलिए फिर उसका हम क्या नाम रखते हैं? 'डाँटते हैं' ऐसा नहीं कहना चाहिए, आमने-सामने तमाचा मारे तब भी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि मुझे 'डाँटते हैं।' हम इसे 'तोता मस्ती'

कहते हैं। तोता ऐसे चोंच मारता है लेकिन फिर भी खून नहीं निकालता। हाँ! आपने तोता मस्ती नहीं देखी है, तोता मस्ती?

अब ऐसी सही बात सुनें तब हमें अपनी गलतियों पर और मूर्खता पर हँसना आता है। सही बात सुनें तब इंसान को बैराग आ जाता है कि ओह हमने ऐसी गलतियाँ कीं? अरे, गलतियाँ नहीं लेकिन मार भी बहुत खाई!

सुखी होने की चाबी

जीवन में सुखी होने के लिए जीवन जीने की कला जानना ज़रूरी है। जीवन जीने की कला तो है ही न? कहीं सभी का मोक्ष नहीं हो जाता लेकिन जीवन जीने की कला तो होनी चाहिए न? भले ही मोह करो, लेकिन मोह पर जीवन जीने की कला तो जानो कि किस तरह जीवन जीना है? सुख के लिए भटकते हैं न, तो क्या क्लेश में सुख होता है? क्लेश तो बल्कि सुख में भी दुःख ले आता है। भटकता है सुख के लिए और लाता है दुःख। जीवन जीने की कला आए तो दुःख न लाए। बल्कि जो दुःख हो उसे भी बाहर निकाल दे।

हमें तो मूलतः ऐसा चाहिए कि क्रोध-मान-माया-लोभ जाएँ और मतभेद कम हो। हमें यहीं पर पूर्णता करनी है, प्रकाश करना है। कब तक यहाँ अंधेरे में रहना है।

झगड़ा का मूल कारण, विषय

प्रश्नकर्ता : व्यवहार में जो अहम् रहता है, तो उसकी वजह से कई बार बहुत बोला-चाली हो जाती है। बहुत चिनगारियाँ निकलती हैं।

दादाश्री : वे अहम् की नहीं होतीं, वे चिनगारियाँ दिखती तो अहंकार की हैं, लेकिन ऐसा विषय की वजह से ही होता है। अगर विषय नहीं हो तो नहीं होता। विषय बंद हो जाए तब फिर वह

इतिहास भी बंद हो जाता है। अगर जो साल छः महीने ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर रहे, उनसे जब मैं पूछता हूँ तो कहते हैं कि, 'एक भी चिनगारी नहीं, किच-किच नहीं, खटपट नहीं कुछ भी नहीं, स्टेन्ड स्टिल (यथावत)!' मैं फिर पूछता भी हूँ। मैं जानता हूँ कि अब ऐसा तो हो जाता है। यानी कि यह सब विषय की वजह से हैं।

जब तक यह विकारी बातें हैं, संबंध है, तब तक टकराव होंगे। टकराव का मूल यही है। जिसने विषय को जीत लिया, उसे कोई नहीं हरा सकता। कोई उसका नाम भी नहीं ले सकता। उसका प्रभाव पड़ता है।

ज़रूरत है दृढ़ मनोबल की

प्रश्नकर्ता : दादा, ऐसा तो समझते हैं कि ये कर्म टकरा रहे हैं लेकिन उसका रास्ता तो निकालना पड़ेगा न? सोल्युशन (हल) तो ढूँढना पड़ेगा न?

दादाश्री : उसका सोल्युशन तो होता है लेकिन लोगों के मनोबल कच्चे होते हैं न! सोल्युशन में तो क्या कि कुछ हिस्सा है, उसे आप बंद कर दो तो तुरंत वह सबकुछ शांत हो जाएगा। लेकिन मनोबल कच्चे हों तो क्या करे?

प्रश्नकर्ता : यह बताइए न कि कौन सा हिस्सा बंद कर देना चाहिए?

दादाश्री : विकारी विषय बंद कर देना, तो अपने आप ही सब बंद हो जाएगा। उसे लेकर यह क्लेश हमेशा चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : अब यह बंद किस तरह से करें?

दादाश्री : विषय को जीतना है।

प्रश्नकर्ता : विषय बंद करने की बावजूद भी अगर टकराव बंद नहीं होता इसीलिए तो हम आपके चरणों में आए हैं।

दादाश्री : तब तो होगा ही नहीं, जहाँ पर विषय बंद हो गया है वहाँ मैंने देखा है कि जितने-जितने पुरुष मजबूत मन के हैं, उनकी स्त्री तो बिल्कुल उनके कहे में रहती हैं।

संसार में खड़ा क्लेश, विषय से

जिसे क्लेश नहीं करना, जो क्लेश का पक्ष नहीं लेता, उसे क्लेश होता तो है लेकिन धीरे-धीरे कम होता जाता है। यह तो, जब तक क्लेश करना ही चाहिए ऐसा मानते हैं, तब तक क्लेश ज्यादा होता है। हमें क्लेश के पक्षकार नहीं बनना चाहिए। 'क्लेश करना ही नहीं है', ऐसा जिसका निश्चय है, उसके पास कम से कम क्लेश आता है और जहाँ क्लेश है वहाँ भगवान तो खड़े ही नहीं रहते न!

संसार में यदि विषय नहीं होता तो क्लेश होता ही नहीं। विषय है इसलिए क्लेश है, वना क्लेश होता ही नहीं!

एक विषय को जितने से....

आपको यदि घर में रोज़-रोज़ के लड़ाई-झगड़े पसंद नहीं हों, तो फिर उसके साथ विकारी संबंध ही बंद कर देना। विषय तो निरी पाशवता है। इसलिए पाशवता बंद कर देना। जो बुद्धिमान और समझदार होगा, उसे विचार नहीं आएगा? फोटो खींचे तो कैसा दिखेगा? फिर भी शर्म नहीं आती? मैंने ऐसा कहा, तब ऐसा सोचोगे, वना ऐसा विचार कहाँ से आएगा? जब तक आप में विकारी संबंध है, तब तक यह लड़ाई-झगड़े रहेंगे ही। इसलिए हम आपके लड़ाई-झगड़ों के बीच पड़ते ही नहीं। हम जानते हैं कि जब विकार बंद हो जाएँगे तब उसके साथ झगड़े बंद हो ही जाएँगे। यानी अपनी भूल से ही यह सब हो रहा है। अपनी भूल के कारण ही ये सारे दुःख हैं। वीतराग कितने समझदार! भगवान महावीर तो तीस साल की उम्र में ही अलग होकर वा... ह...! मस्ती में घूमते थे।

उसके साथ विषय बंद करने के अलावा अन्य कोई उपाय ही नहीं है। इस दुनिया में किसी को इसके अलावा दूसरा कोई उपाय मिला ही नहीं है। क्योंकि इस जगत् में राग-द्वेष का मूल कारण ही यह है, मौलिक कारण ही यह है। यहीं से सारा राग-द्वेष पैदा हुआ है। सारा संसार यहीं से शुरू हुआ है। अतः यदि संसार बंद करना हो तो यहीं से बंद करना पड़ेगा। फिर भले ही आम खाओ, जो अच्छा लगे वह खाओ न! बारह रुपये दर्जनवाले आम खाओ न! कोई पूछनेवाला नहीं है। क्योंकि आम आपके विरुद्ध दावा नहीं करेंगे। आप उन्हें नहीं खाओगे तो, वे कोई कलह नहीं करेंगे जबकि स्त्री-पुरुष के संबंध में तो यदि आप कहो कि 'मुझे नहीं चाहिए।' तब वह कहेगी कि 'नहीं, मुझे तो चाहिए ही।' वह कहे कि 'मुझे सिनेमा देखने जाना है।' तब अगर आप नहीं जाओगे तो कलह! जान पर बन आई समझो! क्योंकि सामने मिश्रचेतन है और वह क्रारवाला है इसलिए दावा करेगी!

जीओ जीवन ऋषिमुनिओं जैसा

प्रश्नकर्ता : इस पर किसी ने सोचा ही नहीं।

दादाश्री : भान ही नहीं है इस चीज़ का। फिर भी प्रकृति बंधी हुई हो तो शादी करना और शादी के बाद भी महीने में दो-तीन बार होना चाहिए।

सिर्फ इतने समय तक ही, ऋषिमुनिओं जैसा होना चाहिए। फिर पूरी ज़िंदगी मित्रतापूर्वक रहें। शुरूआत में शादी होते ही दो-तीन साल ज़रा परिचय रहे, वह भी कितना परिचय? मन्थली कोर्स के बाद पूरे महीने में पाँच ही दिन, उसके बाद नहीं। उसमें एक-दो पुत्र या पुत्री हो गए, उसके बाद सदा के लिए बंद। फिर उस (ओर) दृष्टि ही नहीं।

जीवन है धर्म के लिए, न कि विषय के लिए

सभी धर्मों ने उलझन खड़ी कर दी हैं कि स्त्रियों को छोड़ दो। तो कोई पूछें कि 'अरे, स्त्री को छोड़ दूँ तो मैं कहाँ जाऊँ? मुझे खाना कौन देगा? मैं अपना व्यापार करूँ या घर में चूल्हा फूँकू?'

प्रश्नकर्ता : तो क्या एक दूसरे के पूरक हैं।

दादाश्री : हाँ, पूरक हैं! 'परस्पर देवो भव' कोई अगर कहे कि पत्नी को छोड़ दो तो मोक्ष मिलेगा तो पत्नी ने क्या गुनाह किया है?

प्रश्नकर्ता : और पत्नियाँ भी ऐसा कहती हैं न कि हमें भी मोक्ष चाहिए, हमें आप की ज़रूरत नहीं है।

दादाश्री : हाँ, ऐसा ही कहती है न! आपका और पत्नी का दोनों का साझा व्यापार है।

विवाहित जीवन की तारीफ की हैं इन लोगों ने। शास्त्रकारों ने विवाहित जीवन की निंदा नहीं की है। विवाहित जीवन के अलावा जो भ्रष्टाचार है उसकी निंदा की है। और यह विवाहित जीवन कब तक काम का है कि जब तक दोनों का मान रहे, दोनों के बीच प्रेम रहे और दोनों के मन संभले रहे।

धर्म के मार्ग में आगे बढ़ने के लिए पत्नी रखनी है। दोनों साथ में रहे, और आगे बढ़े। लेकिन यह पूरा विषय रूपी हो गया है। इसमें आगे बढ़ने का तो कहाँ गया लेकिन झगड़े करते हैं! स्त्री हों लेकिन विषय नहीं हो तो कोई दिक्कत ही नहीं है। हाँ अपने ऋषिमुनि शादी करते थे न तो एक-दो, एक बेटा और एक बेटा बस इतना ही, और कुछ भी नहीं, उसके बाद फ्रेन्डशिप। ऐसा जीवन जीना है।

अपनाओ ऋषिमुनियों के नियम

प्रश्नकर्ता : विषय बच्चों की उत्पत्ति जीतना ही होना चाहिए या बर्थ कंट्रोल करके विषय भोगने चाहिए?

दादाश्री : नहीं, नहीं। वह तो ऋषिमुनियों के समय में, पहले तो पति-पत्नी का व्यवहार ऐसा नहीं था, ऋषिमुनि शादी करते थे, वे शादी करने का मना करते थे। तब ऋषिपत्नी ने कहा कि 'आप अकेले हैं, आपका संसार अच्छी तरह नहीं चल पाएगा, प्रकृति अच्छी नहीं रहेगी, इसलिए हम स्त्रियों की पार्टनरशिप रखो तो आप से भक्ति भी होगी और आपका संसार भी चलेगा।' इसलिए उन लोगों ने एक्सेप्ट (स्वीकार) किया लेकिन कहा कि हम तेरे साथ दुनिया नहीं बसाएँगे। तब इन लोगों ने कहा कि 'नहीं हमें एक पुत्र दान और एक पुत्री दान, सिर्फ दो दान देना।' तो उस दान जीतना ही संग, और कोई संग नहीं। फिर हमारी आपके साथ संसार में फ्रेन्डशिप। अतः उन लोगों ने एक्सेप्ट किया और फिर फ्रेन्ड की तरह ही रहते थे, फिर पत्नी की तरह नहीं। वह सब घर का काम निभा लेती थी और ये बाहर का काम निभा लेते। फिर दोनों भक्ति करने बैठ जाते साथ में। लेकिन अभी तो सभी कुछ, सारा धंधा ही यह हो गया है इसलिए बिगड़ गया है सबकुछ। ऋषि-मुनि तो नियमवाले थे।

अभी तो अगर एक पुत्र या पुत्री के लिए विवाह हो तो उसमें हर्ज नहीं है। और उसके बाद में मित्र की तरह रहें, लेकिन दुःखदाई नहीं। ये तो सुख ढूँढते हैं फिर ऐसा ही होगा न! दावे ही करते हैं न!

इसलिए यह व्यवस्था की गई लेकिन उसका तो सारा अर्थ ही बिगड़ गया। यदि एक ही पुत्रदान किया हो (उतना ही विषय हो) तो उसका जो प्रेम

है वह पूरी जिंदगी टिकता है, अप-डाउन हुए बिना!

इन लोगों के भी एक पुत्र और एक पुत्री दो ही होते हैं। लेकिन इन लोगों ने तो ऑपरेशन नाम का एक थियेटर ही खोल दिया है। उस थियेटर में ही खेलते रहते हैं।

इसलिए ऋषि-मुनियों में फिर लड़ाई-झगड़े कुछ नहीं होते थे, मित्रता। मित्र की तरह रहते थे और पुत्र-पुत्री का लालन-पालन करते थे। और इनके लिए तो हमेशा विषय ही। अब हमेशा रहनेवाले विषय में क्या झंझट होती है कि एक को भूख लगी है और दूसरे को नहीं। जिसे नहीं लगी है, वह कहती है कि मुझे नहीं जमेगा। अब दूसरा कहेगा, मुझे भूख लगी है, चला लड़ाई-झगड़ा। ये ही लड़ाई-झगड़े हैं सारे। वर्ना जिंदगीभर मित्रतापूर्वक इतना सुंदर रहे, एक-दूसरे के प्रति सिन्सियर रहेंगे। पूरे दिन कोई क्लेश नहीं, किच-किच नहीं। सारी किच-किच विषय के कारण है।

बन जाओ एक-दूसरे के कम्पैनियन

यह तो सारी 'रोंग बिलीफें' है। 'मैं चंदूभाई हूँ' वह रोंग बिलीफ है। फिर जब घर जाए तब अगर हम पूँछे कि 'यह कौन है?' तब कहता है कि 'नहीं पहचाना? मैं इस स्त्री का पति हूँ।' ओहोहो....! बड़े आए पति बननेवाले! जैसे पति का पति न हो ऐसी बात करता है न! जैसे पति का पति हो। नहीं? ये कैसी धाँधली में पड़े हैं! पति ही क्यों बने? 'हमारे कम्पैनियन (साथी) हैं,' ऐसा कहने में क्या दिक्कत है?

प्रश्नकर्ता : दादा ने बहुत 'मॉर्डन' भाषा का उपयोग किया।

दादाश्री : और क्या? टसर कम हो जाएगी न! हाँ, एक रुम में दो 'कम्पैनियन' रहते हो तो तब

एक जना चाय बनाये और दूसरा पीता है। तब उसके लिए कुछ काम कर देता है, ऐसा करके 'कम्पैनियनशिप' चलती रहती है।

प्रश्नकर्ता : 'कम्पैनियनशिप' में आशक्ति होती है या नहीं?

दादाश्री : उसमें आशक्ति होती है लेकिन वह आशक्ति अग्नी जैसी नहीं होती। ये तो शब्द ही ऐसे गाढ़ आशक्तिवाले हैं, 'पतिपना और पत्नी' इन शब्दों में ही इतनी गाढ़ आशक्ति है और अगर 'कम्पैनियन' कहे तो आशक्ति कम हो जाएगी।

आशक्ति छोड़कर चलो प्रेम के मार्ग पर

जहाँ पर आशक्ति होती है वहाँ पर आक्षेप लगे बिना नहीं रहते। यह आशक्ति का स्वभाव है। आशक्ति हो तो आक्षेप लगते ही रहते हैं न कि 'आप ऐसे हो और आप वैसे हो? आप ऐसे और तू ऐसी?' ऐसा नहीं बोलते? आपके शहर में ऐसा बोलते हैं या नहीं बोलते? ऐसा जो बोलते हैं वे आशक्ति की वजह से।

ये लड़कियाँ ऐसे देखभाल कर पति पसंद करती हैं और फिर झगड़ती नहीं हैं? झगड़ती हैं? तो इसे प्रेम कहेंगे ही नहीं न! प्रेम तो हमेशा के लिए होता है। जब देखो तब वही प्रेम। वैसा ही दिखे उसे प्रेम कहते हैं और वहीं पर आश्वासन लेने जाते हैं। यह तो घर में किसी पर प्रेम आता हो और एक दिन वह रुठकर बैठ जाती है, तो रहने दे तेरा प्रेम तेरे पास! डाल दे गटर में यहाँ से। मुँह चढ़ाकर घुमे तो ऐसे प्रेम का क्या करना है? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : प्रेम ऐसा होना चाहिए कि कभी भी मुँह न बिगाड़े। वह प्रेम हमारे पास मिलता है। पति

दादावाणी

डॉटे तो भी प्रेम कम-ज्यादा नहीं होता। ऐसा प्रेम होना चाहिए। हिरो के टॉप्स ले आए उस घड़ी प्रेम बढ़ जाता है, वह भी आसक्ति है। अतः यह दुनिया आसक्ति से चल रही है। प्रेम तो ज्ञानीपुरुष से लेकर ठेठ तीर्थकर भगवान तक होता है। उन लोगों के पास प्रेम का लाइसेन्स होता है। वे प्रेम से ही लोगों को सुखी कर देते हैं। वे प्रेम से ही बाँधते हैं कि छूट नहीं सकते। अलौकिक प्रेम, जिसमें लौकिक नाममात्र को भी नहीं होता।

समझो आसक्ति और प्रेम के बीच भेद

प्रश्नकर्ता : इसमें जरा प्रेम और आसक्ति के बीच भेद समझाइए।

दादाश्री : इस जगत् में हम जिसे प्रेम कहते हैं वह विकृत प्रेम कहलाता है और उसी को आसक्ति कहते हैं।

यह तो आलपीन और चुंबक, दोनों के बीच जैसी आसक्ति है वैसी ही आसक्ति है। इसमें प्रेम जैसी चीज़ है ही नहीं। प्रेम है ही नहीं न किसी जगह पर। यह तो आलपीन और चुंबक के आकर्षण की वजह से आपको ऐसा लगता है कि मुझे प्रेम है इसीलिए मैं खिंच रहा हूँ। लेकिन उसमें प्रेम जैसी

चीज़ ही नहीं है। प्रेम तो, ज्ञानीपुरुष के प्रेम को प्रेम कहते हैं।

इस दुनिया में जो शुद्ध प्रेम है वही परमात्मा है। उसके अलावा इन दुनिया में और कई परमात्मा हुआ ही नहीं है और होगा भी नहीं। और वहाँ पर दिल शांत होता है और तब दिलेर काम होते हैं, नहीं तो दिलेर काम नहीं हो पाते। दो प्रकार से दिल को टंडक होती है। अधोगति में जाना हो तो किसी स्त्री के साथ दिल लगाना और ऊर्ध्वगति में जाना हो तो ज्ञानीपुरुष के साथ दिल लगाना, और वे तो तुझे मोक्ष में ले जाएँगे। दोनों जगह पर दिल की जरूरत पड़ेगी। तो दिलेरी प्राप्त होगी।

अतः जिस प्रेम में क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं है, स्त्री नहीं है, पुरुष नहीं है, जो प्रेम समान, एक सरीखा रहता है, ऐसा शुद्ध प्रेम देखे तब इंसान के दिल को टंडक होती है।

मैं प्रेम स्वरूप हो चुका हूँ। इस प्रेम में ही आप मस्त हो जाओगे तो जगत् को भूल ही जाओगे, जगत् विस्मृत होता जाएगा। प्रेम में मस्त हो जाए तो आपका संसार व्यवहार बहुत अच्छी तरह चलेगा। आदर्श रूप से चलेगा।

- जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, ई-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वीं तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पिनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं., पूरा नाम-पता, पिनकोड के साथ लिखकर मोबाइल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org ई-मेल आइडी पर ई-मेल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

दादावाणी

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाइट्स

१९-२३ सितम्बर : सेफ़्रोनी, मेहसाना में अविवाहित बहनों के लिए पाँच दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित हुई। ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण के साथ-साथ जुदापन की जागृति कैसे रखी जाए उस विषय पर बहुत ही सुंदर प्रश्नोत्तरी सत्संग हुए। इस बार बहनों द्वारा एक नया ही प्रयास किया गया। दादा भगवान परिवार के मूल्यों पर शिविरार्थी बहनों ने छोटी-छोटी टीम बनाकर हर एक मूल्य पर विचारणा करके उसका प्रेजेंटेशन किया। आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा नाटक, गरबा वगैरह कार्यक्रम हुए। शिविर में ३०७ बहनों ने भाग लिया। अंतिम दिन पूज्यश्री के व्यक्तिगत दर्शन से शिविरार्थियों ने धन्यता का अनुभव किया।

२४-२८ सितम्बर : सेफ़्रोनी मेहसाना में अविवाहित भाईयों के लिए पाँच दिवसीय ब्रह्मचर्य शिविर आयोजित की गई। ब्रह्मचर्य पुस्तक पर पारायण, दुःखदाई वाणी के स्वरूप तथा जुदापन की जागृति कैसे रखी जाए, इस विषय पर बहुत ही सुंदर सत्संग हुए। आप्तपुत्रों द्वारा ग्रुप सत्संग, व्यक्तिगत मार्गदर्शन तथा नाटक, गरबा, श्री विज्ञान वी.सी.डी. वगैरह कार्यक्रम हुए। शिविर में ३९० भाईयों ने भाग लिया। अंतिम दिन पूज्यश्री के व्यक्तिगत दर्शन से भाईयों ने धन्यता का अनुभव किया। भाईयों ने पूज्यश्री के साथ मोर्निंग वॉक की तथा MBA, SHEEL आकार में खड़े रहकर एरियल व्यू फोटो सेशन में हिस्सा लिया था।

२८-२९ सितम्बर : पूज्यश्री नवरात्रि के दौरान दो दिन ए.टी.पी.एल (अडालज संकुल) में आयोजित गरबा में पधारे थें। गरबा करते हुए महात्माओं को पूज्यश्री ने दर्शन दिए। अहमदाबाद, कड़ी-कलोल और गांधीनगर के महात्माओं ने भी गरबा में हिस्सा लिया तथा माताजी की भक्ति और पूज्यश्री की हाजिरी से धन्यता का अनुभव किया। पूज्यश्री ने भक्ति के बारे में सबका उत्साह बढ़ाया और अंत में अंबा माताजी की आरती की गई।

३० सितम्बर : ऑस्ट्रेलिया-न्यूजीलेन्ड-सिंगापोर सत्संग प्रवास के लिए पूज्यश्री ने सीमंधर सिटी से प्रस्थान किया।

२-८ अक्तूबर : ऑस्ट्रेलिया सत्संग प्रवास की शुरुआत केनबरा में पूज्यश्री के आगमन से हुई। वे वहाँ के प्रसिद्ध मिनिएचर कोर्कीगटन ग्रीन गार्डन और क्वेस्टाकोन साइन्स और टेक्नोलोजी म्यूजीयम में गए। केनबरा के स्थानिक महात्माओं से मिलकर सत्संग सेन्टर शुरू करने के लिए प्रोत्साहन दिया। सिडनी में सत्संग ज्ञानविधि में २०६ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। रविवार को आप्तपुत्र द्वारा पेरेन्ट्स महात्माओं के लिए और शाम को पूज्यश्री द्वारा फॉलोअप सत्संग के बाद बालकों के द्वारा कल्चरल प्रोग्राम पेश किया गया। ६ तारीख को पूज्यश्री के हाथों सीमंधर स्वामी की लगभग ४५ प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की गई और महात्माओं ने गरबा किया। दिनांक ७-८ को वाइजमेन फेरी डेल-रीओ रिसोर्ट में दो दिवसीय रिट्रीट का आयोजन हुआ। इसमें पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार और टीम वर्क के साथ सेवा जैसे विषयों पर पूज्यश्री का सत्संग हुआ।

आप्तपुत्रों द्वारा पूज्य नीरू माँ के साथ हुए सुंदर अनुभव, MMHT - WMHT के सत्संग, कांगारू दर्शन, दादा दरबार में पूज्यश्री से मुलाकात और दर्शन, जनरल सत्संग वगैरह कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

मुख्य सेन्टरों के संपर्क : अडालज त्रिमंदिर: (079) 39830100, अहमदाबाद: (079) 27540408, वडोदरा : (दादा मंदिर) 9924343335, राजकोट त्रिमंदिर: 9274111393, भूज त्रिमंदिर: (02832) 290123, गोधरा त्रिमंदिर: (02672) 262300, मुंबई: 9323528901, दिल्ली: 9310022350, बैंगलूर: 9590979099, कोलकता: 033-32933885, यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), ऑस्ट्रेलिया: +61 421127947, केन्या: +254 722722063

Contact details of various activities at Adalaj Trimandir Sankul & other Trimandirs/Centers

Sr. No.	Department	Phone No.	Timing	email ID	
1	Mahiti Kendra - For general Information	(O)079-3983 0100	9:30am - 7pm	webmaster@dadabhagwan.org	
	Basic Information / guidelines - for new seekers	(M)09327010101,	9:30am - 7pm	mhtinfo@dadabhagwan.org	
		(O) 079-39830910			
2	Dadavani Magazine Complaints	(M) 08155007500	9:30am - 7pm	dadavani@dadabhagwan.org	
	Akram Express Magazine Complaints	(M) 08155007500	9:30am - 7pm	akramexpress@dadabhagwan.org	
	Akram Youth Magazine Complaints	(M) 08155007500	9:30am - 7pm	ak.youth@dadabhagwan.org	
	Satsang Coordination Dept	(O)079-39830400,	9:30am-12:30 &		satsang@dadabhagwan.org
		(M)09924348880	3:00pm - 6:30pm		
3	Global Facilitation Dept	(M)09924343434 / (M)09924343886	9:30am - 7pm	simcity@dadabhagwan.org	
4	Vignan Bhandar - Dadashri's Literature (Books, DVD, VDD, MP3, Photos, Murti etc.). To get these items via Post/Parcel.	(O)079-39830034, (M) 09924343805	9:30am - 7pm	store@dadabhagwan.org	
5	Distribution Office (For Wholesale order of Dadashri's Literature)	(O)079-39830028,	9:30am - 6:30pm	distribution@dadabhagwan.org	
		(M) 08155007475			
6	Adalaj Trimandir - Food Pass counter / Group Booking	(O)079- 39830096	9 am to 7:30 pm		
		(M) 09924308886 / (M) 09924343494		kuntesh.joshi@dadabhagwan.org	
7	Stop N Stay - Guest House (Staying facility in Adalaj Trimandir)	(M)09924273300 /	9:30am - 7pm	stopnstay@dadabhagwan.org	
		(O) 079-39830300			
		(O) 079-39830445	9:30am - 7pm	stopnstay@dadabhagwan.org	
8	Dormitory (Staying facility in Adalaj Trimandir)	(M) 9924754445			
		(O) 079 39830069	10.30 to 6 pm	gnc@dadabhagwan.org	
9	GNC - Activities for Kids & Youth	(M) 09924343877		balvignan@dadabhagwan.org	
10	Adalaj Trimandir School Visit	(O)079-39830036/37	9:30am - 6 pm	info@ambahealthcentre.com	
		(O)079-39830398	9:30am - 7pm	nirant@dadabhagwan.org	
11	Amba Health Centre (Hospital)	(O) 7698989666 / (M)09574008027	9 am to 5 pm	info@ambaschool.com	
		(M) 9924344481, (O)079-39830032	9:30 am to 6 pm	gnanmandir@dadabhagwan.org	

Contact details of various activities at Adalaj Trimandir Sankul & other Trimandirs/Centers

Sr. No.	Department	Phone No.	Timing	email ID
12	ATPL Admin Office (Marketing)	(O)079-39830005/52/53/54 (M)09924343944	9:30 am to 6 pm	sales@ambatownship.com
13	Amba Tech (Dadabhagwan Website / Mobile App / Whatsapp group)	(O) 079-39830057	9:30 am to 6 pm	webmaster@dadabhagwan.org
14	HR, Sevarthi Management Bhaio	(M) 8155007471, (O) 079-39830017	9:30 am to 6 pm	hr.m@dadabhagwan.org
15	HR, Sevarthi Management Baheno	(O) 079-39830078	9:30 am to 6 pm	hr.f@dadabhagwan.org
	Trimandirs: Non-Sectarian Temple to Eradicate Religious Differences			
	Trimandir-Adalaj	(M)09924343792 / (O)079-3983 0915	9:30 am to 6 pm	trimandir.adalaj@dadabhagwan.org
	Trimandir-Rajkot	(M)09924343478	9:30 am to 6 pm	trimandir.rajkot@dadabhagwan.org
	Trimandir-Bhuj	(M)07567561556 / (O)02832-290123	9:30 am to 6 pm	trimandir.bhuj@dadabhagwan.org
	Trimandir-Godhra	(M)09723707738	9:30 am to 6 pm	
	Trimandir-Surendranagar	(M)09879232877	9:30 am to 6 pm	
	Trimandir-Morbi	(M)02822-297097	9:30 am to 6 pm	
	Trimandir-Bhadran	(M)09924343729 / (O)02696-288428	9:30 am to 6 pm	
	Trimandir-Chalamali	(M)09825058546	9:30 am to 6 pm	
	Trimandir-Vasna	(M)09687221945	9:30 am to 6 pm	
	Dada Darshan - Ahmedabad	(O) 079-27540408, (M) 09924343791	9 am to 5 pm	ahmedabad@in.dadabhagwan.org
	Dada Mandir-Vadodara	(O)0265-2414142, (M) 09924343335	9 am-1 pm, 3-7pm (શુક્રવારે બંધ)	dadamandir@dadavadodara.org
	Vignan Bhandar-Surat Station	(M) 9574008108	7am - 12pm 4pm - 9pm	
	Mumbai Center	(M)09323528901	9:30 am to 6 pm	mumbai@in.dadabhagwan.org

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

भोपाल	दि : 15-23 नवम्बर संपर्क : 9425024405	अमृतसर	दि : 2 दिसम्बर संपर्क : 9814063043
वाराणसी	दि : 20-21 नवम्बर संपर्क : 9795228541	बड्डी (हि.प्र.)	दि : 3 दिसम्बर संपर्क : 9816612700
इलाहाबाद	दि : 22 नवम्बर संपर्क : 9335889980	चंडीगढ़	दि : 4 दिसम्बर संपर्क : 9872188973
कानपुर	दि : 23 से 25 नव. संपर्क : 9452525981	कुरुक्षेत्र	दि : 5 दिसम्बर संपर्क : 9671868450
लखनऊ	दि : 26 नवम्बर संपर्क : 8090177881	पानीपत	दि : 6 दिसम्बर संपर्क : 9467130414
बैंगलोर	दि : 22 नव. से 3 दिस. संपर्क : 9590979099	दिल्ली	दि : 7 दिसम्बर संपर्क : 9810098564
दिल्ली	दि : 30 नवम्बर संपर्क : 9810098564	गाझियाबाद	दि : 7 दिसम्बर संपर्क : 9968738972
जालंधर	दि : 1 दिसम्बर संपर्क : 9814063043	हिसार	दि : 8 दिसम्बर संपर्क : 9812025423
कपुरथला	दि : 2 दिसम्बर संपर्क : 9814063043	आगरा	दि : 10 दिसम्बर संपर्क : 9258744087

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करें।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'आस्था' पर हर रोज रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन' - बिहार पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन' - भोपाल पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
	+ 'दूरदर्शन' - गुजरात-गिरनार पर हर रोज सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
	+ 'अरिहंत' पर हर रोज सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
USA	+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)
Dubai	+ 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह ३ से ३-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
Australia	+ 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
New Zealand	+ 'सब टीवी' पर हर रोज दोपहर १२ से १२-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
USA-Canada-UK-Singapore	+ 'सब टीवी' पर हर रोज सुबह ८ से ८-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	+ 'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर मंगलवार से शुक्रवार सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में)
	+ 'साधना' पर हर रोज शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
	+ 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
	+ 'दूरदर्शन' गुजरात -गिरनार पर हर रोज रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
	+ 'अरिहंत' चैनल पर हर रोज रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
	+ 'दूरदर्शन-सह्याद्रि' पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
USA	+ 'TV Asia' पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
UK	+ 'वीनस' टीवी पर हर रोज सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में) - नया कार्यक्रम
Singapore	+ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
Australia	+ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ७-३० से ८ (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
New Zealand	+ 'कलर्स' टीवी पर हर रोज सुबह ९-३० से १० (हिन्दी में) - नया कार्यक्रम
USA-UK-Africa-Aus.	+ 'आस्था' (डीश टीवी चैनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज रात ९-३० से १० (गुजराती में)

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

वेरावल

दि. १९ नवम्बर (बुध), रात्र ८-३० से ११ -सत्संग तथा २० नवम्बर. (गुरु), शाम ७-३० से ११ - ज्ञानविधि
स्थल : श्रीपाल सोसायटी ग्राउन्ड, नई हवेली के सामने, हवेली चोक, वेरावल. संपर्क : 9228216025

ध्रांगध्रा

दि. २३ नवम्बर (रवि), रात्र ८-३० से ११ -सत्संग तथा २४ नवम्बर (सोम), शाम ७-३० से ११ - ज्ञानविधि
स्थल : शीशुकुंज, नगरपालिका टाउन होल के सामने, ध्रांगध्रा (जि. सुरेन्द्रनगर). संपर्क : 9428239439

बेंगलोर

दि. ५ तथा ६ दिसम्बर (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३०-सत्संग तथा ७ दिसम्बर (रवि), शाम ५ से ८-३०-ज्ञानविधि
स्थल : शिक्षक सदन ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी. रोड. संपर्क : 9590979099

भोपाल

दि. ९ दिसम्बर (मंगल), शाम ६-३० से ९ -सत्संग तथा १० दिसम्बर (बुध), शाम ५-३० से ९ -ज्ञानविधि
११ दिसम्बर (गुरु), शाम ६-३० से ९ - आप्तपुत्र सत्संग
स्थल : न्यू केम्पियन स्कूल ओडिटोरियम, ई-7, अरेरा कोलोनी, शाहपुरा लेक के पास. संपर्क : 9425676774

दिल्ली

दि. १२ तथा १३ दिसम्बर (शुक्र-शनि), शाम ६ से ८-३०-सत्संग तथा १४ दिसम्बर (रवि), शाम ५ से ८-३०-ज्ञानविधि
स्थल : लौरैल हाई-स्कूल, शिवा मार्केट के पीछे, अग्रसेन धर्मशाला के पास, पीतमपुरा. संपर्क : 9811332206

गांधीनगर

दि. ३ जनवरी (शनि), शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा ४ जनवरी (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
स्थल : च-3 के ग्राउन्ड के पास, बस डिपो के पीछे, सेक्टर-11, गांधीनगर (गुजरात). संपर्क : 9624004045

मुंबई

दि. ३०-३१ जनवरी (शुक्र-शनि), शाम ६-३० से ९ - सत्संग तथा १ फरवरी (रवि), शाम ५-३० से ९ - ज्ञानविधि
स्थल : आझाद मैदान, महानगर पालिका रोड, BMC हेड ऑफिस सामने, CST (VT)स्टेशन सामने. संपर्क : 9323528901

अडालज त्रिमंदिर

आप्तवाणी-3 तथा 7 (गुजराती) पर सत्संग शिविर (पारायण)

दि. २० से २७ दिसम्बर - सुबह ९-३० से १२-४५ तथा शाम ४-३० से ७, रात ८-३० से ९-३० (सामायिक)

दि. २८ दिसम्बर - सुबह ९-३० से १२ - श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा

सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह ९ से शाम ७ के दौरान) पर दि. ३० नवम्बर २०१४ तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

2) हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। आनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का एफएम रेडियो और हेडफोन लेकर आए।

3) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग जगहों पर हो सकती है, इसलिए अपना सामान अलग से लाएँ।

4) ओढ़ने एवं बीछाने का चदर, एयर पीलो व जरूरी दवाएँ साथ में लाएँ। किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।

5) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्त आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे अपना आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

नवम्बर २०१४
वर्ष - १० अंक - १
अखंड क्रमांक - १०९

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2012-2014
Valid up to 31-12-2014
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2012
Valid up to 31-12-2014
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

सही परिभाषा प्रेम की

मोहवाला प्रेम तो बेकार होता है सारा! ऐसे प्रेम में मत फँसना। बगैर प्रेम मनुष्य जी नहीं सकता यह बात सच है, किन्तु प्रेम उसकी परिभाषा सहित होना चाहिए। कभी चढ़े-उतरे नहीं उसका नाम प्रेम। यदि कहीं पर कम-ज्यादा होता है, तो उसकी जाँच करना। हमारा प्रेम बढ़ता नहीं, घटता नहीं, क्योंकि उसमें आसक्ति नहीं है, उसी को प्रेम कहते हैं। ऐसा प्रेम भगवान का होता है, ऐसे प्रेम से जी सकते हैं। प्रेम की परिभाषा आपको पता चली? ऐसा प्रेम ढूँढो। अब मोहवाला प्रेम मत ढूँढना कि कल सुबह वह 'डाइवोर्स' ले ले। इनका क्या ठिकाना? प्रेम और मोह, उसमें मोह में न्योछावर होने में बदले की आशा होती है और प्रेम में बदले की आशा नहीं होती।

-दादाश्री



Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.